

डायरेक्ट या रेगुलर : बाजार में पैसा लगाने से पहले अपना लक्ष्य तय करें

निवेश से पहले समझें कौन सा प्लान सबसे बेहतर

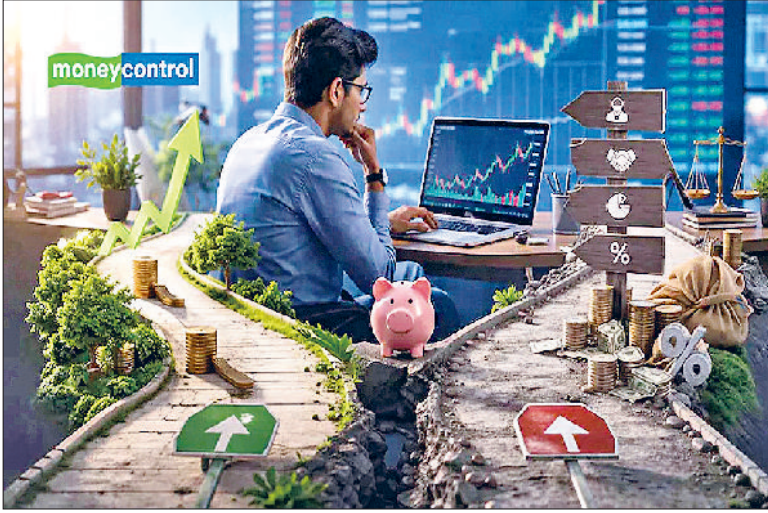
दोनों प्लान में निवेश एक ही फंड और लगभग समान पोर्टफोलियो में होता है ■ खर्च, एनएवी और लंबी अवधि के रिटर्न में आ सकता है अंतर ■ निवेशक अपनी रिस्क क्षमता और जरूरत के आधार पर लें फैसला

म्यूचुअल फंड निवेश में एक्सपेंस रेटियो का महत्व इसलिए बढ़ जाता है, क्योंकि निवेश लंबे समय के लिए किया जाता है। यदि दो समान योजनाओं में से एक में खर्च लगातार थोड़ा अधिक है, तो कई वर्षों में इसका असर निवेश के कुल मूल्य पर पड़ सकता है। इसीलिए निवेशक को केवल पिछले रिटर्न को देखकर फैसला नहीं करना चाहिए। उसे एक्सपेंस रेटियो, फंड का प्रदर्शन, जोखिम, निवेश का उद्देश्य और अपने निवेश की अवधि जैसे पहलुओं को भी देखना चाहिए।

निवेश मंत्रा

बिजनेस डेस्क

म्यूचुअल फंड में निवेश का फैसला करते समय केवल यह देखना पर्याप्त नहीं है कि कौन सा फंड अच्छा प्रदर्शन कर रहा है। निवेशक को यह भी समझना चाहिए कि वह डायरेक्ट प्लान में निवेश कर रहा है या रेगुलर प्लान में। दोनों विकल्पों में आमतौर पर एक ही म्यूचुअल फंड स्कीम और एक ही फंड मैनेजर के जरिए निवेश किया जाता है, लेकिन दोनों की लागत संरचना अलग होती है। यही अंतर लंबी अवधि में निवेश के रिटर्न पर असर डाल सकता है। निवेशक के लिए सबसे बड़ा सवाल यह है कि आखिर डायरेक्ट प्लान और रेगुलर प्लान में अंतर क्या है और इनमें से कौन सा विकल्प उसके लिए बेहतर है। इसका जवाब हर निवेशक के लिए एक जैसा नहीं हो सकता। यदि निवेशक खुद फंड की रिसर्च कर सकता है और अपने पोर्टफोलियो को संभालने में सक्षम है तो डायरेक्ट प्लान कम लागत वाला विकल्प हो सकता है। वहीं नए या ऐसे निवेशक जिन्हें फंड चुनने और निवेश प्रबंधन में मदद चाहिए, उनके लिए रेगुलर प्लान उपयोगी हो सकता है।



रेगुलर प्लान में मिलती है डिस्ट्रीब्यूटर की मदद

रेगुलर प्लान में निवेशक म्यूचुअल फंड कंपनी यानी एक्ससी तक सीधे नहीं पहुंचता। वह बैंक, म्यूचुअल फंड डिस्ट्रीब्यूटर, ब्रोकर या वित्तीय सलाहकार के माध्यम से निवेश करता है। निवेश प्रक्रिया पूरी करने के साथ-साथ डिस्ट्रीब्यूटर निवेशक को फंड चुनने, कागजी प्रक्रिया और निवेश से जुड़ी दूसरी सेवाओं में मदद कर सकता है। इस सेवा की लागत भी होती है। म्यूचुअल फंड कंपनी डिस्ट्रीब्यूटर को कमीशन देती है और यह खर्च फंड के एक्सपेंस रेटियो में शामिल होता है। इसलिए आमतौर पर रेगुलर प्लान का एक्सपेंस रेटियो उसी स्कीम के डायरेक्ट प्लान की तुलना में अधिक होता है।

डायरेक्ट प्लान में नहीं होता डिस्ट्रीब्यूटर कमीशन

डायरेक्ट प्लान में निवेशक किसी डिस्ट्रीब्यूटर के माध्यम से निवेश करने के बजाय सीधे एक्ससी से निवेश करता है। इसमें डिस्ट्रीब्यूटर को कमीशन नहीं देना पड़ता। इसी कारण डायरेक्ट प्लान का एक्सपेंस रेटियो आमतौर पर रेगुलर प्लान से कम होता है। कम खर्च का फायदा लंबी अवधि में दिखाई दे सकता है। चूंकि निवेश की लागत कम रहती है, इसलिए बाकी परिस्थितियां समान रहने पर डायरेक्ट प्लान का नेट रिटर्न रेगुलर प्लान से थोड़ा अधिक हो सकता है। हालांकि यह समझना जरूरी है कि डायरेक्ट प्लान का मतलब कम जोखिम नहीं है। बाजार में उतार-चढ़ाव और फंड से जुड़े जोखिम दोनों प्लान में बने रहते हैं।

एनएवी भी होता है अलग

कई निवेशक यह मान लेते हैं कि जब स्कीम और फंड मैनेजर एक ही हैं तो डायरेक्ट प्लान और रेगुलर प्लान का एनएवी भी समान होना चाहिए। लेकिन ऐसा नहीं है। दोनों प्लान के खर्च अलग होने के कारण इनके एनएवी में भी अंतर हो सकता है। रेगुलर प्लान में डिस्ट्रीब्यूटर से जुड़ी लागत शामिल होती है, जबकि डायरेक्ट प्लान में यह लागत नहीं होती। इसी वजह से समय के साथ दोनों प्लान के एनएवी और निवेशक के अंतिम रिटर्न में अंतर पैदा हो सकता है। यह अंतर किसी अलग निवेश रणनीति के कारण नहीं, बल्कि मुख्य रूप से दोनों प्लान की लागत संरचना के कारण होता है।

किसके लिए बेहतर

डायरेक्ट प्लानउन निवेशकों के लिए अधिक उपयुक्त हो सकता है जिन्हें म्यूचुअल फंड की पर्याप्त जानकारी है। ऐसे निवेशक खुद अलग-अलग फंड की तुलना कर सकते हैं, जोखिम समझ सकते हैं और अपने पोर्टफोलियो की समय-समय पर समीक्षा कर सकते हैं। यदि निवेशक को पता है कि उसे किस श्रेणी के फंड में निवेश करना है और वह अपने निवेश संबंधी फैसले खुद लेने में सहज है, तो कम एक्सपेंस रेटियो वाला डायरेक्ट प्लान उसके लिए लागत के लिहाज से आकर्षक हो सकता है। लेकिन केवल कम खर्च देखकर डायरेक्ट प्लान चुनना सही रणनीति नहीं है।

किसके लिए रेगुलर प्लान उपयोगी ?

- रेगुलर प्लान ऐसे निवेशकों के लिए उपयोगी हो सकता है जिन्हें निवेश की जानकारी सीमित है या जो फंड चुनने और पोर्टफोलियो संभालने में विशेषज्ञ की मदद चाहते हैं।
- नए निवेशक के लिए कई बार सही फंड चुनना, जोखिम का आकलन करना, निवेश की अवधि तय करना और पोर्टफोलियो में बदलाव करना चुनौतीपूर्ण हो सकता है। ऐसे में डिस्ट्रीब्यूटर की सहायता सुविधा प्रदान कर सकती है। हालांकि निवेशक को यह भी समझना चाहिए कि इस सुविधा की लागत फंड के खर्च में शामिल होती है।

फैसला करने से पहले इन बातों पर दें ध्यान

डायरेक्ट प्लानया रेगुलर प्लान चुनने से पहले निवेशक को अपनी वित्तीय स्थिति और जानकारी का आकलन करना चाहिए। केवल यह सोचकर डायरेक्ट प्लान चुनना उचित नहीं है कि उसका एक्सपेंस रेटियो कम है। इसी तरह केवल सुविधा के लिए रेगुलर प्लान लेना भी जरूरी नहीं है। निवेशक को यह देखना चाहिए कि वह कितने समय के लिए निवेश कर रहा है, कितना जोखिम उठा सकता है, फंड की लागत कितनी है और क्या वह अपने निवेश की गिरगनी खुद कर सकता है।

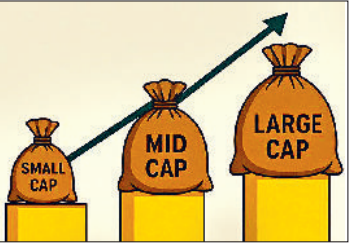
निवेश का फैसला जल्दबाजी में न करें

डायरेक्ट प्लान और रेगुलर प्लान के बीच चुनाव व्यक्तिगत जरूरत पर निर्भर करता है। डायरेक्ट प्लान में कम लागत का फायदा मिल सकता है, जबकि रेगुलर प्लान में डिस्ट्रीब्यूटर की सहायता और सुविधा मिलती है। दोनों में निवेश का बाजार जोखिम बना रहता है। इसलिए निवेश करने से पहले केवल प्लान का नाम देखकर फैसला न करें। फंड के उद्देश्य, जोखिम, एक्सपेंस रेटियो, पिछला प्रदर्शन, निवेश अवधि और अपनी वित्तीय जरूरतों को समझना जरूरी है। जरूरत पड़ने पर योग्य वित्तीय सलाहकार से सलाह लेकर ही निवेश का निर्णय लेना बेहतर है।

5,000 की एसआईपी

लार्ज, मिड या स्मॉल कैप

कहां बनेगा बड़ा फंड



बिजनेस डेस्क

हर महीने 5,000 रुपये की एसआईपी शुरू करने वाले निवेशक के सामने सबसे बड़ा सवाल होता है कि पैसा लार्ज, मिड या स्मॉल कैप फंड में लगाया जाए। तीनों कैटेगरी में जोखिम और रिटर्न की संभावना अलग होती है। इसलिए केवल पिछले एक साल के रिटर्न को देखकर फैसला करना सही रणनीति नहीं है। इक्विटी म्यूचुअल फंड में निवेश का फायदा तभी बेहतर तरीके से मिल सकता है, जब निवेशक लंबी अवधि तक बाजार में बना रहे और उतार-चढ़ाव के दौरान घबराकर एसआईपी बंद न करे। पहले समझिए तीनों कैटेगरी में अंतर

सेबी के वर्गीकरण के अनुसार लार्ज कैप फंड मुख्य रूप से बाजार पूंजीकरण के आधार पर देश की शीर्ष 100 कंपनियों में निवेश करते हैं। 101वीं से 250वीं रैंक वाली कंपनियां मिडकैप और इसके बाद की कंपनियां स्मॉल कैप श्रेणी में आती हैं। लार्ज कैप कंपनियां आकार में बड़ी और स्थापित होती हैं। इसलिए इनके कारोबार में अपेक्षाकृत स्थिरता देखने को मिल सकती है। हालांकि इसका मतलब यह बिल्कुल नहीं है कि लार्ज कैप फंड सुरक्षित या जोखिम-मुक्त है। शेयर बाजार में बड़ी गिरावट आने पर इनमें भी नुकसान हो सकता है। मिड कैप कंपनियां आकार में लार्ज कैप से छोटी होती हैं, लेकिन इनमें कारोबार तेजी से बढ़ाने की संभावना हो सकती है। इसी वजह से इनके शेयरों में उतार-चढ़ाव भी अधिक हो सकता है।

पहली बार निवेश कर रहे हैं तो लार्ज कैप पर विचार

अगर कोई निवेशक पहली बार इक्विटी म्यूचुअल फंड में एसआईपी शुरू कर रहा है और बहुत ज्यादा उतार-चढ़ाव नहीं चाहता, तो लार्ज कैप फंड अपेक्षाकृत आसान शुरुआत हो सकते हैं। बड़ी कंपनियों के पास आमतौर पर लंबा कारोबारी ट्रैक रिकॉर्ड और मजबूत कारोबार होता है। फिर भी निवेशक को यह समझना चाहिए कि लार्ज कैप का मतलब गारंटीड रिटर्न नहीं है। बाजार में 15-20% की गिरावट आती है तो लार्ज फंड भी नीचे जा सकते हैं। अंतर केवल इतना है कि मिड कैप और स्मॉल कैप की तुलना में उतार-चढ़ाव कई बार कम हो सकता है।

15 साल में 9 लाख का निवेश कितना होगा

5,000 रुपये की मासिक एसआईपी 15 साल तक जारी रखने पर कुल निवेश 9 लाख रुपये होगा। उदाहरण के लिए, पिछले 15 वर्षों के औसत सालाना रिटर्न को आधार मानकर लार्ज कैप के लिए करीब 11.9%, मिड कैप के लिए 17.2% और स्मॉल कैप के लिए करीब 14.7% रिटर्न माना जाए, तो अलग-अलग कैटेगरी में निवेश से रकम अलग बन सकती है। उपरोक्त अनुपात में 2,500 लार्ज कैप, 1,500 मिड कैप और 1,000 रुपये स्मॉल कैप में लगाने पर ऐतिहासिक औसत रिटर्न को सिर्फ उदाहरण के तौर पर इस्तेमाल करने पर 15 साल में करीब 28.7 लाख का फंड बन सकता है। इसमें लगभग 9 लाख मूल निवेश और करीब 19.7 लाख का अनुमानित लाभ शामिल होगा। हालांकि यह सिर्फ गणितीय अनुमान है। बाजार का वास्तविक रिटर्न हर साल अलग हो सकता है और भविष्य में यही रिटर्न दोहराया जाएगा, इसकी कोई गारंटी नहीं है।

समय से पहले एफडी तोड़ रहे हैं तो रखें ध्यान, वरना नुकसान

पैसों की जरूरत में एफडी बंद करना जरूरी नहीं, घटेगी ब्याज की रकम

बैंक की सावधि जमा यानी एफडी को सुरक्षित निवेश का साधन माना जाता है। यही वजह है कि बड़ी संख्या में लोग अपनी बचत को निश्चित अवधि के लिए एफडी में जमा करते हैं। लेकिन कई बार अचानक पैसों की जरूरत पड़ जाती है और निवेशक को एफडी की अवधि पूरी होने से पहले ही रकम निकालने का फैसला करना पड़ता है। ऐसी स्थिति में एफडी को समय से पहले बंद करना संभव है, लेकिन इसके कुछ आर्थिक नुकसान भी हो सकते हैं। एफडी शुरू करते समय बैंक एक निश्चित अवधि और ब्याज दर तय करता है। यदि निवेशक उस अवधि के पूरा होने से पहले एफडी बंद करता है तो जरूरी नहीं कि उसे शुरुआत में तय ब्याज दर का पूरा लाभ मिले। बैंक के नियमों के अनुसार ब्याज में कटौती की जा सकती है और कुछ मामलों में समय से पहले एफडी बंद करने का शुल्क भी लगाया जा सकता है। इसलिए जल्दबाजी में एफडी तोड़ने के बजाय पहले इन पांच जरूरी बातों को समझ लेना चाहिए।

- समय से पहले एफडी बंद करने पर लग सकता है शुल्क सबसे पहले अपने बैंक के नियमों की जानकारी लें। एफडी की तय अवधि पूरी होने से पहले पैसा निकालने पर बैंक समयपूर्व निकासी शुल्क या जुर्माना लगा सकता है। यह शुल्क बैंक, एफडी की अवधि और जमा की गई रकम के अनुसार अलग-अलग हो सकता है। इसलिए एफडी बंद करने से पहले बैंक से यह जरूर पता करें कि शुल्क के रूप में कितनी रकम काटी जाएगी और एफडी बंद करने के बाद आपके खाते में वास्तविक रूप से कितनी राशि आएगी।

समझदारी

बिजनेस डेस्क

2. पूरा ब्याज नहीं मिल सकता

समय से पहले एफडी बंद करने का सबसे बड़ा असर मिलने वाले ब्याज पर पड़ सकता है। एफडी बनते समय जिस ब्याज दर का निर्धारण किया गया था, जरूरी नहीं कि समय से पहले एफडी बंद करने पर उसी दर से ब्याज मिले। बैंक आमतौर पर उस अवधि के आधार पर ब्याज की गणना कर सकता है, जितने समय तक रकम वास्तव में एफडी में जमा रही। इसके अलावा समयपूर्व निकासी का शुल्क भी लगाया जा सकता है। उदाहरण के लिए, यदि आपने पांच साल के लिए एफडी कराई थी, लेकिन दो साल बाद ही उसे बंद कर दिया, तो आपको पांच साल की तय ब्याज दर का पूरा लाभ नहीं मिल सकता।

3. ब्याज पर लगने वाले कर को भी समझें

एफडी से मिलने वाला ब्याज आपको आय का हिस्सा माना जाता है और उस पर लागू आयकर नियमों के अनुसार कर देनापारी बन सकती है। इसलिए समय से पहले एफडी बंद करने का फैसला करते समय केवल शुल्क और ब्याज में होने वाले नुकसान पर ही ध्यान न दें। यह भी देखें कि एफडी से अब तक कितना ब्याज अर्जित हुआ है और उस पर आपको कर देनापारी कितनी बन सकती है। अलग-अलग निवेशकों की कर स्थिति अलग हो सकती है।



4. एफडी तोड़ने के बजाय उसके बदले कर्ज ले सकते हैं

अगर आपको थोड़े समय के लिए पैसों की जरूरत है तो पूरी एफडी बंद करना हमेशा जरूरी नहीं है। अपने बैंक से यह पता किया जा सकता है कि एफडी के बदले कर्ज या अधिविकर्स की सुविधा उपलब्ध है या नहीं। इस व्यवस्था में एफडी को जारी रखते हुए उसकी जमानत के आधार पर जरूरत के रकम प्राप्त की जा सकती है। इससे एफडी पूरी तरह बंद करने से होने वाले ब्याज के नुकसान से बचने का मौका मिल सकता है। हालांकि, इस विकल्प में बैंक कर्ज पर ब्याज और अन्य शुल्क ले सकता है।

5. पूरी एफडी तोड़ने के बजाय आंशिक निकासी देखें

अगर आपको एफडी में जमा पूरी रकम की जरूरत नहीं है तो पहले यह पता करें कि आपको

बैंक आंशिक निकासी की सुविधा देता है या नहीं। मान लीजिए आपको एफडी में पांच लाख रुपये जमा हैं और आपको केवल दो लाख रुपये की जरूरत है। ऐसी स्थिति में यदि बैंक आंशिक निकासी की सुविधा देता है तो पूरी एफडी बंद करने के बजाय जरूरत के मुताबिक रकम निकाली जा सकती है। इससे बची हुई रकम एफडी में बनी रह सकती है और उस पर आगे ब्याज मिलता रह सकता है। हालांकि, आंशिक निकासी के नियम और ब्याज की गणना बैंक के अनुसार अलग हो सकती है। इसलिए यह सुविधा उपलब्ध है या नहीं और इसका आपको एफडी पर क्या असर पड़ेगा, इसकी जानकारी पहले बैंक से लेनी चाहिए।

जरूरत पर लें एफडी तोड़ने का फैसला एफडी को समय से पहले बंद करना जरूरत की स्थिति में उपयोगी हो सकता है, लेकिन इसे सावधान्य स्थिति में पहला विकल्प नहीं माना जाना चाहिए। यदि पैसों की जरूरत कम अवधि के लिए है तो पहले आंशिक निकासी, एफडी के बदले कर्ज या अधिविकर्स जैसे विकल्पों की जानकारी लेना बेहतर हो सकता है। एफडी बंद करने से पहले बैंक से मिलने वाली वास्तविक रकम, ब्याज की गणना, समयपूर्व निकासी शुल्क और कर देनापारी की जानकारी जरूर लें। इसके बाद ही तय करें कि एफडी तोड़ना आपके लिए आर्थिक रूप से सही फैसला है या नहीं। निवेश संबंधी सावधानी: एफडी से जुड़े नियम और शुल्क बैंक के अनुसार अलग-अलग हो सकते हैं। एफडी बंद करने से पहले संबंधित बैंक की शर्तों और लागू कर नियमों की जानकारी जरूर लें।

प्रसंस्करण शुल्क की जानकारी पहले लें किस्त लेने से पहले बैंक या वित्तीय संस्था से यह जरूर पूछें कि प्रसंस्करण शुल्क कितना है। यह एक निश्चित रकम हो सकती है या खरीदारी की रकम के आधार पर तय हो सकती है। इस पर लागू कर की जानकारी भी लें। कुछ बैंकों की 2026 की शर्तों में किस्त सुविधा पर न्यूनतम रकम या लेनदेन के प्रतिशत के आधार पर प्रसंस्करण शुल्क निर्धारित है। इसलिए हर 'नो-कॉस्ट' प्रस्ताव की वास्तविक लागत अलग हो सकती है।

त्योहार में छूट देखकर बजट न बिगाड़ें त्योहारी ऑफर का फायदा उठाना मालत नहीं है, लेकिन छूट का मतलब बचत तभी है जब खरीदारी आपके बजट के भीतर हो। खरीदारी की रकम पहले से तय करें और उसी सीमा में सामान खरीदें। अगर कोई सामान जरूरत का है और उस पर वास्तविक छूट मिल रही है, किस्त की कुल लागत स्पष्ट है और मासिक भुगतान आसानी से किया जा सकता है तो प्रस्ताव पर विचार किया जा सकता है। केवल 'आज का ऑफर', 'सीमित समय की छूट' या 'बिना ब्याज की किस्त' देखकर ज्यादा खर्च करना आर्थिक दबाव बढ़ाता है।

खरीदारी से पहले ये पांच चीजें जरूर जांचें

- पहला, सामान की नकद कीमत और किस्त में कुल भुगतान कितना है।
- दूसरा, तत्काल छूट छोड़ने पर आपको कितना नुकसान हो रहा है।
- तीसरा, प्रसंस्करण शुल्क और उस पर लगने वाली कर कितने हैं।
- चौथा, समय से पहले किस्त बंद करने पर कोई शुल्क लगेगा या नहीं।
- पांचवां, ढेर से भुगतान की स्थिति में कितना अतिरिक्त खर्च हो सकता है।

‘नो-कॉस्ट’ नहीं, कुल लागत देखें

नो-कॉस्ट ईएमआई खराब विकल्प नहीं है, लेकिन इसे तभी चुनना समझदारी है जब सामान की जरूरत हो, कुल लागत स्पष्ट हो और किस्त आपको आर्थिक क्षमता के भीतर हो। आसान किस्त देखकर नहीं, पूरी कीमत देखकर फैसला करें।

त्योहारी ऑफरों में ‘नो-कॉस्ट ईएमआई’ देखकर न बहकें, वरना जेब होगी खाली

त्योहारों पर आसान किस्त और छूट के प्रस्ताव बढ़ेंगे

बिजनेस डेस्क

त्योहारों का मौसम शुरू होते ही बाजार और ऑनलाइन खरीदारी में तरह-तरह के आकर्षक ऑफर आने लगते हैं। मोबाइल, टीवी, फ्रिज, वॉशिंग मशीन से लेकर फर्नीचर और दूसरे महंगे सामान पर भारी छूट के साथ आसान मासिक किस्तों के प्रस्ताव ग्राहकों को खरीदारी के लिए आकर्षित करते हैं। इनमें नो-कॉस्ट ईएमआई या बिना ब्याज वाली किस्त का प्रस्ताव सबसे ज्यादा लुभाता है। ग्राहक को लगता है कि महंगा सामान बिना अतिरिक्त ब्याज के छोटे-छोटे भुगतानों में खरीदा जा सकता है। लेकिन त्योहारों की खरीदारी में इस तरह के प्रस्ताव को देखकर तुरंत फैसला करना समझदारी नहीं है। 'नो-कॉस्ट' का मतलब यह जरूरी नहीं कि खरीदारी से जुड़ी कोई लागत ही नहीं होगी। कई मामलों में प्रसंस्करण शुल्क, कर, छूटी हुई तत्काल छूट, समय से पहले कर्ज बंद करने का शुल्क या ढेर से भुगतान का जुर्माना ग्राहक की कुल लागत बढ़ा सकता है। अलग-अलग बैंक और ऋणदाता अपनी अलग शर्तें रखते हैं। मसलन, 2026 में बैंकों की प्रकाशित शुल्क तालिकाओं में किस्त सुविधा के लिए प्रसंस्करण शुल्क और समयपूर्व भुगतान शुल्क के अलग-अलग प्रावधान दिखाई देते हैं। इसलिए इस त्योहारी मौसम में खरीदारी से पहले केवल मासिक किस्त नहीं, बल्कि कुल भुगतान पर नजर रखना जरूरी है।



पहले तय करें, सामान की जरूरत है या नहीं

त्योहारों में सबसे बड़ी गलती यही होती है कि ग्राहक जरूरत से ज्यादा खरीदारी कर लेता है। इतनी बड़ी छूट दोबारा नहीं मिलेगी या इतनी कम किस्त में सामान मिल रहा है जैसी सोच खरीदारी का फैसला प्रभावित कर सकती है। इससे बचने का आसान तरीका है कि बाजार जाने या ऑनलाइन खरीदारी शुरू करने से पहले जरूरी सामान की सूची बना लें। जो सामान पहले से खरीदने की योजना में नहीं था, उसे केवल छूट या किस्त के प्रस्ताव के कारण खरीदने से बचें। याद रखें, जिस सामान की जरूरत नहीं है, उस पर मिलने वाली बड़ी छूट भी वास्तव में बचत नहीं है। उल्टा, उसकी मासिक किस्त आपके आने वाले महीनों के बजट को प्रभावित कर सकती है।

‘नो-कॉस्ट’ का मतलब पूरी तरह मुफ्त नहीं

नो-कॉस्ट ईएमआई में आमतौर पर सामान की कीमत को कोई मासिक किस्तों में बांट दिया जाता है और ब्याज की राशि को वित्ता की ओर से दी जाने वाली छूट के माध्यम से समायोजित किया जा सकता है। इसलिए ग्राहक को अलग से ब्याज चुकाने का बोझ दिखाई नहीं देता। लेकिन यहां एक महत्वपूर्ण बात समझना जरूरी है। ब्याज का समायोजन हो जाने के बाद भी प्रसंस्करण शुल्क या अन्य शुल्क लागू हो सकते हैं। इसलिए केवल 'बिना ब्याज' लिखा देखकर यह मान लेना सही नहीं है कि ग्राहक को कोई अतिरिक्त रकम नहीं देनी होगी। उदाहरण के लिए, कुछ बैंकों की मौजूदा शुल्क तालिकाओं में किस्त सुविधा पर लेनदेन राशि के आधार पर प्रसंस्करण शुल्क और समय से पहले किस्त बंद करने पर अलग शुल्क का प्रावधान है।

नकद व किस्त वाली कीमत की तुलना करें

त्योहारी खरीदारी में ग्राहक को सबसे पहले सामान की वास्तविक नकद कीमत और किस्त योजना में चुकाई जाने वाली कुल रकम की तुलना करनी चाहिए। मान लीजिए किसी सामान की कीमत एक लाख रुपये है। दुकान पर उसे 12 महीनों की किस्त में खरीदने का प्रस्ताव दिया जा रहा है। मासिक किस्त देखकर यह तय न करें कि सौदा सस्ता है। सभी किस्तों को जोड़ें और उसमें प्रसंस्करण शुल्क, कर तथा अन्य लागू खर्च शामिल करें। देखें कि कुल भुगतान कितना हो रहा है। यदि सामान पर बिना किस्त भुगतान पर अलग छूट मिल रही है तो उस छूट को भी तुलना में शामिल करें। कई बार किस्त के लाचर में तत्काल भुगतान को मिलने वाली छूट छेड़ देता है।

खबर संक्षेप

बेसहारा बच्चों की प्रतिभा निखार रहे गुलशन शर्मा



रोहतक। गोहाना रोड स्थित चौधरी लखीराम आर्य जगन्नाथ आश्रम में राष्ट्रीय खेल दिवस के अवसर पर फाइन-पस स्पोर्ट्स चैरिटेबल संस्था की ओर से कबड्डी, वॉलीबाल एवं रस्साकशी प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। प्रतियोगिताओं में आश्रम में रहने वाले बच्चों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया और अपनी खेल प्रतिभा का प्रदर्शन किया। आश्रम के प्रधान रणवीर सिंह छिकरा बच्चों की सेवा और उनके बेहतर भविष्य के लिए लगातार प्रयासरत हैं। आश्रम में ऐसे बच्चों को सहारा दिया जाता है, जिनके माता-पिता नहीं हैं, परिवार ने उन्हें छोड़ दिया है अथवा जो किसी कारण से बेसहारा हो गए हैं। जरूरतमंद बच्चों को पुलिस द्वारा भी यहां पहुंचाया जाता है। आश्रम में बच्चों के पालन-पोषण, शिक्षा और अन्य आवश्यकताओं का ध्यान रखा जाता है। वहीं एशियन वर्ल्ड स्पोर्ट्स मार्टर्स गेम में पदक विजेता गुलशन शर्मा इन बच्चों को खेलों से जोड़कर उनकी प्रतिभा को आगे बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। उनके मार्गदर्शन में बच्चे कबड्डी, वॉलीबाल, हॉकी और रस्साकशी जैसी खेल गतिविधियों में हिस्सा लेकर आत्मविश्वास हासिल कर रहे।

राजकीय महिला महाविद्यालय में राष्ट्रीय खेल दिवस हर्षोल्लास के साथ मनाया

मेजर ध्यानचंद की जयंती पर छात्राओं ने विभिन्न प्रतियोगिताओं में दिखाया दमखम



सोनीपत। राजकीय महिला महाविद्यालय में कार्यक्रम के दौरान विजेता छात्राओं के साथ प्राचार्य एवं अन्य। फोटो : हरिभूमि

हरिभूमि न्यूज़►►सोनीपत

सेक्टर 12 स्थित राजकीय महिला महाविद्यालय सोनीपत में राष्ट्रीय खेल दिवस एवं हॉकी के जादूगर मेजर ध्यानचंद की जयंती के अवसर पर विभिन्न खेल प्रतियोगिताओं का आयोजन उत्साहपूर्वक किया गया। छात्राओं ने बड़-चढ़कर भाग लेते हुए अपनी खेल प्रतिभा का प्रदर्शन किया। प्रतियोगिताओं में रस्साकशी, गोला फेंक, 100 मीटर दौड़ और बैडमिंटन शामिल रहे। रस्साकशी में बीए प्रथम वर्ष की टीम ने कप्तान हिमांशी के नेतृत्व में प्रथम स्थान हासिल

किया। गोला फेंक में हिमांशी प्रथम, नीतू द्वितीय और मानसी तृतीय रहीं। बैडमिंटन में रितिका ने पहला, मानसी ने दूसरा और अन्नू गिरी ने तीसरा स्थान प्राप्त किया। 100 मीटर दौड़ में शिवानी प्रथम, गायत्री द्वितीय और इशिका तृतीय रहीं। कॉलेज की प्राचार्या डॉ. किरण सरोहा एवं वरिष्ठ प्राध्यापक डॉ. नरेश अंतिल ने विजेताओं और प्रतिभागियों को बधाई दी। उन्होंने विद्यार्थियों के शारीरिक एवं मानसिक विकास में खेलों के महत्व पर प्रकाश डाला। इस अवसर पर खेल विभागाध्यक्ष प्रवेश, नवीन वशिष्ठ, सतीश मलिक और सुनील पंवार उपस्थित रहे।

खेल शारीरिक-मानसिक विकास के लिए जरूरी

खरखौदा। सावित्रीबाई फुले राजकीय कन्या महाविद्यालय, खरखौदा में भारतीय खेल प्राधिकरण एवं युवा मामले और खेल मंत्रालय के निर्देशानुसार 28 से 30 अगस्त तक खेल प्रतियोगिताएं आयोजित करने, फिटनेस गतिविधियां और खेलों के प्रति जन जागृति उत्पन्न करने के लिए एक घंटा खेल के मैदान में अभियान के तहत विभिन्न गतिविधियां प्राचार्य प्रोफेसर अनिल कुमार के नेतृत्व में करवाई गई। इस वर्ष की थीम 'खेलेगा भारत, जीतेगा भारत' है। अपने संबंधन में प्राचार्य ने कहा कि खेल हमारे शारीरिक और मानसिक विकास के लिए अत्यंत आवश्यक हैं। खेल हमें अनुशासन टीम भावना और हार जीत को समान रूप से स्वीकार करने की प्रेरणा देते हैं। यह दिवस हॉकी के जादूगर मेजर ध्यानचंद की जयंती के उपलक्ष्य में मनाया जाता है। कार्यक्रम का शुभारंभ प्राचार्य, शारीरिक शिक्षा विभाग और खेल क्लब के सदस्यों की उपस्थिति में मेजर ध्यानचंद को याद करके किया गया। शारीरिक शिक्षा विभागाध्यक्ष डॉ. दर्शना ने छात्राओं को खेलों के महत्व तथा राष्ट्रीय, अंतरराष्ट्रीय स्तर पर मिलने वाली पुरस्कार राशि के साथ-साथ महाविद्यालय में सभी खेल सुविधाओं के विषय में विस्तार से बताया और



उनको खेलने के लिए प्रेरित किया। इस अवसर पर महाविद्यालय में विभिन्न खेल प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया, जिसमें लगभग 50 छात्राओं ने बड़-वढ़कर भाग लिया। बैडमिंटन और रस्साकशी के इवेंट करवाए गए। जिसमें बैडमिंटन में छात्राओं द्वारा सिंगल और डबल मैच खेले गए। स्टाफ द्वारा भी बैडमिंटन मैच खेला गया। रस्साकशी का मैच टीम ए और टीम बी के बीच खेला गया जिसमें टीम ए विजयी रही। सिमरन, रजनी, अशिका, ज्योति, सुशी, पायल, स्नेहा, आरती, निशु आशु, आरती, मंजू, हिमांशी, ईशा, मुस्कान, नीतू, रितिका, पूजा, तुलसी, प्रिया आदि छात्राओं ने खेल गतिविधियों में सक्रिय भागीदारी की।

कबड्डी प्रतियोगिता में मेजर ध्यानचंद सदन की टीम विजेता

खरखौदा। राष्ट्रीय खेल दिवस के अवसर पर जग उत्थान खेल शिक्षा समिति द्वारा प्रताप स्कूल खरखौदा में कबड्डी प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। मेजर ध्यानचंद सदन और जयपाल सिंह मुंडा सदन के बीच तीन मैचों की सीरीज खेली गई। रोमांचक मुकाबलों में मेजर ध्यानचंद सदन की टीम ने शानदार प्रदर्शन करते हुए 2-1 से सीरीज अपने नाम की।कार्यक्रम का शुभारंभ स्कूल प्रिंसिपल दया दहिया व महिला मोर्चा मंडल अध्यक्ष स्नेह दहिया ने किया। उन्होंने खिलाड़ियों से परिचय प्राप्त कर उनका उत्साहवर्धन किया। विजेता टीम को नकद पुरस्कार देकर सम्मानित किया गया। इस अवसर पर स्नेह दहिया ने कहा कि खेल व्यक्ति के जीवन में अनुशासन, आत्मविश्वास, नेतृत्व क्षमता और संघर्ष करने की भावना पैदा करते हैं। खेलों के माध्यम से व्यक्ति का शारीरिक, मानसिक एवं सामाजिक रूप से सर्वांगीण विकास होता है। उन्होंने कहा कि आज पूरा देश महान हॉकी खिलाड़ी मेजर ध्यानचंद की जयंती के अवसर पर राष्ट्रीय खेल दिवस मना रहा है।



प्रमातफेरी से श्रीमद्भागवत कथा का किया प्रचार-प्रसार

सोनीपत। इस्कॉन प्रचार समिति की ओर से शनिवार को शहर में हरिनगम संकीर्तन प्रमातफेरी निकाल प्रभु गुणगान किया गया। प्रमातफेरी ककरोई रोड स्थित दुर्गा मंदिर से तुलसी पूजन के पश्चात प्रारंभ की गई। इसके बाद विकास नगर, मालवीय नगर होते हुए वापस दुर्गा मंदिर में नरसिंह आरती के साथ संपन्न हुई। प्रमातफेरी के दौरान समिति सदस्यों ने अग्रवाल धर्मशाला में 27 सितंबर से 3 अक्टूबर तक होने वाली श्रीमद्भागवत कथा का प्रचार-प्रसार किया। श्रद्धालुओं को कथा में शामिल होने का आह्वान किया गया। साथ ही जगह-जगह हरिनगम की महिमा का वर्णन कर श्रद्धालुओं को प्रसाद वितरित किया गया। प्रमातफेरी में कृष्ण कृपा दास, रघु कुमार दास, कृष्ण कुमार गर्ग, ईश्वर चंद, गुरदास, शंत नरसिंह दास, बुजनारद दास, कृष्ण चांवाल, जयप्रकाश, सहदेव प्राण दास सहित कॉलोनी वासी कई श्रद्धालुओं ने भाग लिया।

रैली को लेकर इनेलो की तैयारियां तेज कार्यकर्ताओं को सौंपी गई जिम्मेदारियां

हरिभूमि न्यूज़►►खरखौदा

इनेलो कार्यकर्ताओं की बैठक जिला प्रभारी प्रदीप गिल की अध्यक्षता में खरखौदा में हुई। जिसमें 27 सितंबर को चौधरी जननायक की स्मृति में आयोजित होने वाले जन्मोत्सव एवं रैली की तैयारियों को लेकर कार्यकर्ताओं के साथ विस्तृत चर्चा की गई और आगामी कार्यक्रमों की रूपरेखा तय की गई। मुख्य अतिथि के तौर पर सोनीपत प्रभारी एवं सफरीदों के पूर्व विधायक रामफल कुंडू ने शिरकत की। उन्होंने कहा कि 27 सितंबर को होने वाली रैली को लेकर इनेलो द्वारा तैयारियां जोर-शोर से शुरू कर दी गई हैं। इसी कड़ी में 9 सितंबर को इनेलो नेता अभय सिंह चौटाला खरखौदा पहुंचेंगे। इसके अलावा 2 सितंबर को प्रदेश इनेलो महिला प्रभारी सुनेना चौटाला



खरखौदा। कार्यकर्ताओं को संबोधित करते पूर्व विधायक रामफल कुंडू।

के खरखौदा दौरे को लेकर भी तैयारियां का जा रही हैं। रामफल कुंडू ने कार्यकर्ताओं से कहा कि सुनेना चौटाला के दौरे के लिए जल्द ही गांव के कार्यक्रम तय किया जाए तथा प्रत्येक गांव में कार्यकर्ताओं की जिम्मेदारी लगाकर अधिक से अधिक लोगों को पार्टी से जोड़ने का काम किया जाएगा। कार्यकर्ताओं से 27 सितंबर की रैली में अधिक से

हरिभूमि न्यूज़►►सोनीपत

दिल्ली रेल मंडल के अंतर्गत आने वाले सोनीपत स्टेशन पर निर्माणाधीन नए फुट ओवरब्रिज का निर्माण अब अंतिम चरण में है। फुट ओवरब्रिज पर गोलाकार के शेड व सिढ़ियां बनाने का काम पूरा हो चुका है, जबकि चारों प्लेटफार्म पर स्वचालित सिढ़ियां (एस्केलेटर) व लिफ्ट लगाने के कार्य तेजी पकड़ने लगा है। एक माह पहले सामान पहुंचने के बाद अब प्लेटफार्म नंबर दो पर स्वचालित लगाई जा रही हैं, ताकि यात्रियों को सभी प्लेटफार्म पर आवागमन में सुविधा मिल सके। अधिकारियों की मानें, तो प्रदेश में ए ग्रेड ओवरब्रिज का शुभारंभ कर 15 अगस्त को यात्रियों को नई सौगात दी जानी थी, लेकिन सभी



सोनीपत। स्टेशन के प्लेटफार्म दो पर लगाई जा रही स्वचालित सिढ़ियां। फोटो : हरिभूमि

प्लेटफार्म पर स्वचालित सिढ़ियों व लिफ्ट संबंधी कार्य अधूरे होने के चलते फुट ओवरब्रिज को पूर्ण रूप से चालू नहीं किया गया है। इस बीच दिल्ली रेल मंडल के उच्च अधिकारियों ने संबंधित एजेंसी को कार्य में तेजी लाने के निर्देश दिए हैं। बता दें कि सोनीपत स्टेशन से रोजाना करीब 40 हजार से ज्यादा यात्री दिल्ली, अंबाला, गोहाना,

मेजर ध्यानचंद को 121वीं जयंती पर किया नमन

गोहाना। राष्ट्रीय खेल दिवस पर शनिवार को शहर में शहीद मदनलाल धींगड़ा खेल स्टेडियम में मेजर ध्यानचंद की 121वीं जयंती मनाई गई। समारोह में नागरिकों ने मेजर ध्यानचंद के चित्र पर पुष्प अर्पित करके श्रद्धांजलि दी। मुख्य वक्ता आजाद हिंद देशभक्त मोर्चा के मुख्य संरक्षक आजाद सिंह दांगी ने कहा मेजर ध्यानचंद मात्र 16 वर्ष की आयु में सेना में भर्ती हो गए थे। सेना में रहते हुए हॉकी के प्रति उनका जुनून लगातार बढ़ता गया। करीब 22 वर्षों तक भारत का प्रतिनिधित्व किया और अंतरराष्ट्रीय हॉकी में 400 से अधिक गोल करने का गौरव प्राप्त हुआ। गेंद उनकी हॉकी स्टिक से इस तरह चिकनी रहती थी जैसे सटीक और गेंद के बीच कोई अदृश्य रिश्ता हो। यही कारण था कि उन्हें दुनिया भर में हॉकी का जादूगर कहा जाने लगा। 1936 में बर्लिन ओलिंपिक के फाइनल मैच में भारत ने जर्मनी को 8-1 के अंतर से करारी शिरकत दी। इसके बाद जर्मनी के तानाशाह एडोल्फ हिटलर भी मेजर ध्यानचंद के मुक़ाबे हो गए।

अधिक संख्या में लोगों को लेकर पहुंचने का आह्वान किया। उन्होंने कहा कि आने वाले समय में भयम राहित चौटाला प्रदेश के मुख्यमंत्री बनेंगे और चहुंमुखी विकास होगा। प्रदेश सरकार पर निशाना साधते कहा कि आज प्रदेश में विकास जयंती प्रभावित हो रहे हैं तथा आम जनता को समस्याओं के चलते परेशानी का सामना करना पड़ रहा है।

प्रतियोगिताओं में शिक्षक छात्राओं ने दिखाई प्रतिभा

गोहाना। राजकीय महिला महाविद्यालय, गोहाना में 24 से 29 अगस्त तक खेल दिवस मनाया गया। उत्साह, उमंग एवं खेल भावना के साथ यह कार्यक्रम प्राचार्या डॉ. मीनाक्षी सांगवान के मार्गदर्शन में आयोजित हुआ। इस आयोजन का उद्देश्य विद्यार्थियों में खेल भावना, अनुशासन, शारीरिक स्वास्थ्य, टीम भावना एवं नेतृत्व क्षमता का विकास करना था। छह दिवसीय खेल आयोजन के दौरान बैडमिंटन, शतरंज, कैरम, वॉलीबॉल, टेबल टेनिस तथा जिमखाना सहित विभिन्न खेल एवं मनोरंजक गतिविधियों का आयोजन किया गया। इन प्रतियोगिताओं में छात्राओं के साथ-साथ शिक्षण एवं गैर-शिक्षण कर्मचारियों ने भी खेल कौशल, अनुशासन, प्रतिस्पर्धात्मक भावना तथा आपसी सहयोग का उत्कृष्ट प्रदर्शन किया। छात्राओं की खेल स्पर्धाओं में पायल, प्रिया, निशा, अंजलि, नैसी, प्रिया, अनुना, राखी, प्रियांका, शशि, नैसी, आरती और स्वीटी जबकि स्टाफ सदस्यों में वानी, कविता, सीमा, मीनाक्षी, नीरज, महक जैन, रवीना, एकता वशिष्ठ, रेखा, कविता ऐन, रविंत कुमार, सदीप, विकास मलिक, देवेद सिंह और विक्रम सिंह सहित अन्य शिक्षकों ने सराहनीय प्रदर्शन किया। कार्यक्रम के समापन पर पुरस्कार वितरण किया गया। कार्यक्रम के सफल आयोजन में देवेद सिंह एवं महाविद्यालय की खेल समिति का महत्वपूर्ण योगदान रहा।



श्रद्धालुओं ने सबकी खुशहाली के लिए की पूजा-अर्चना

सोनीपत। हलवाई हट्टा स्थित श्रीदेवी विदुषि वाली माता मंदिर में सावन माह के उपलक्ष्य में चल रहे 30 दिवसीय महामूर्त्युंजय अनुष्ठान एवं शतचंडी यज्ञ शनिवार को विधिविधान व वैदिक मंत्रोच्चारण पूर्णहुति के साथ संपन्न हुआ। अनुष्ठान के अंतिम दिन काफी संख्या में श्रद्धालुओं ने मंदिर पहुंचकर पूजा-अर्चना की और धर्म लाभ प्राप्त किया। धार्मिक अनुष्ठान में मुख्य यजमान के रूप में दिल्ली निवासी रमेश चंद अवगतल ने परिवार सहित मनावान गणेश, मां अंबिका व सर्व वेदी पूजन के साथ महामूर्त्युंजय व शतचंडी यज्ञ में पूर्णहुति दायीं। तत्पश्चात माता रानी की आरती व कन्या पूजन कर मंदिर परिसर में भंडारा लगाया गया। धार्मिक अनुष्ठान में पंडित अमित शौनक, पंडित राजेश शौनक व बडीत से आएं आचार्य पुष्पेन्द्र व अन्य ब्राह्मणों ने वैदिक विधियों को मंत्रोच्चारण के साथ संपन्न करवाया।

निगम के खजाने में करीब 13.50 करोड़ रुपये गृहकर के रूप में जमा हो चुके हैं। निगम को उम्मीद है कि छूट की अंतिम तिथि नजदीक आने के साथ बकाया गृहकर जमा कराने वालों की संख्या और बढ़ सकती है।

ऑनलाइन भी सुविधा

नगर निगम अधिकारियों ने बताया कि बकाया गृहकर को ऑनलाइन माध्यम से भी जमा करवाया जा सकता है। ऑनलाइन गृहकर जमा करने के लिए वेबसाइट ulbharyana.gov.in या ndc.haryana.gov.in पोर्टल पर जाकर शहर का विकल्प चुनकर इसके बाद वेबसाइट पर रजिस्ट्रेशन करें। प्रॉपर्टी आईडी के विकल्प में अपना प्रॉपर्टी आईडी नंबर डालकर क्लिक करते ही बिल से संबंधित जानकारी स्क्रीन पर दिखाई देगी। जानकारी सही है, तो पेमेंट के लिए आगे बढ़ें। यदि बिल में कोई गड़बड़ी है, तो इसे ठीक करने के लिए निगम की प्रॉपर्टी शाखा में संपर्क किया जा सकता है।

राशि में 31 अगस्त तक 75 प्रतिशत छूट प्रदान की गई है। हालांकि योजना का लाभ लेने के लिए अब केवल दो दिन का समय शेष है। गृहकर जमा कराने के लिए लोग नगर निगम कार्यालय पहुंच रहे हैं। अब तक नगर

गृहकर जमा करवाने में दिलचस्पी दिखाने लगे लोग, छुट्टी के दिन 22 ने जमा करवाए 3.10 लाख रुपये



सोनीपत। रेलवे रोड स्थित नगर निगम कार्यालय। फोटो : हरिभूमि

अधिकारियों की मानें, तो लोगों की सुविधा के लिए रविवार को भी निगम कार्यालय खोला जाएगा। निगम की ओर से शहरवासियों को लंबे समय से बकाया गृहकर जमा करने के लिए अलग-अलग माध्यम से प्रोत्साहित

किया जा रहा है। कभी मुनादी करवाकर लोगों में जागरूकता लाई जा रही है, तो कहीं पोस्टर, बैनर चस्पए गए हैं। छूट योजना के तहत वर्ष 2011-12 से अब तक के बकाया गृहकर को जमा करने पर ब्याज की



उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले खिलाड़ी सम्मानित

सोनीपत। अर्बन स्परल फोटो स्टूडियो वेलफेयर एसोसिएशन, सोनीपत की ओर से ठक्कर कॉम्प्लेक्स में सम्मान एवं उत्साहवर्धन समारोह का आयोजन किया गया। समारोह में एसोसिएशन से जुड़े परिवारों के उन वर बच्चों को सम्मानित किया गया, जिन्होंने खेलों के क्षेत्र में उल्लेखनीय सफलता हासिल की है। समारोह के दौरान मुकेशबाजी अंडर-15 वर्ग में दिल्ली का प्रतिनिधित्व करते हुए कार्य पदक जीतने वाले दल सुपुत्र सुभाष को सम्मानित किया गया। इसके अलावा जून 2026 में आयोजित अंडर 17 इंटरनेशनल एशियन चैम्पियनशिप में रजत पदक हासिल करने वाली नीतिका सुपुत्री मंजीत को सम्मानित किया गया। वहीं हॉकी के क्षेत्र में उपलब्धि हासिल करने वाली साक्षी और वंशिका को भी मंच से प्रोत्साहन मिला। साक्षी ने 23 अगस्त को पुणे मेजुनियर हॉकी नेशनल चैम्पियनशिप में स्वर्ण पदक जीता है। वहीं वंशिका ने जुलाई 2026 में ग्वालियर में संपन्न हुई जूनियर वीमेन हॉकी अकादमी नेशनल गेम्स में शानदार प्रदर्शन करते हुए रजत पदक अपने नाम किया था।



टीकाराम गर्ल्स कॉलेज में मनाया खेल दिवस

सोनीपत। टीकाराम गर्ल्स कॉलेज, सोनीपत में हॉकी के जादूगर मेजर ध्यानचंद की जयंती के उपलक्ष्य में राष्ट्रीय खेल दिवस उत्साह और गरिमापूर्ण वातावरण में मनाया गया। कार्यक्रम का उद्देश्य विद्यार्थियों में खेल भावना, अनुशासन, टीम भावना और स्वस्थ जीवनशैली के प्रति जागरूकता बढ़ाना रहा। कार्यक्रम का शुभारंभ मेजर ध्यानचंद के चित्र पर पुष्प अर्पित कर किया गया। कॉलेज प्राचार्या डॉ. प्रो. उषा दहिया ने मेजर ध्यानचंद की जीवनी और खेलों में उनके योगदान पर प्रकाश डालते हुए विद्यार्थियों को खेलों में बड़-वढ़कर भाग लेने के लिए प्रेरित किया। इसके बाद खेल भावना और अनुशासन की शपथ दिलाई गई। विद्यार्थियों और शिक्षकों ने चेन रिले, पारिंग बॉल, कौंडन चैलेंज, गुब्बारा रिले, कबड्डी और रस्साकशी सहित विभिन्न गतिविधियों में उत्साहपूर्वक भाग लिया। इस दौरान प्रतिभागियों ने टीम भावना और खेल भावना का प्रदर्शन किया। टीकाराम एजुकेशन सोसाइटी के प्रधान सुरेंद्र सिंह दहिया ने सभी कर्मचारियों और विद्यार्थियों को राष्ट्रीय खेल दिवस की शुभकामनाएं देते हुए उनके उत्कृष्ट भविष्य की कामना की।

खबर संक्षेप

मेयर ने विकास कार्यों का निरीक्षण किया



सोनीपत। नगर निगम क्षेत्र में सीवरज और जलभराव की समस्याओं के स्थायी समाधान को लेकर मेयर राजीव जैन ने गांव लिवान सहित विभिन्न क्षेत्रों का दौरा कर विकास कार्यों का निरीक्षण किया। लिवान में नवनिर्मित एमपीएस (मैन पॉपिंग स्टेशन) का निरीक्षण करते हुए उन्होंने बचे कार्य को जल्द पूरा करने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि एमपीएस शुरू होने से गांव में वर्षा पुरानी सीवरज ओवरफ्लो की समस्या समाप्त होगी। मेयर ने लिवान-एचएसआईडीसी रोड पर विकसित कॉलोनिंगों में जलभराव के समाधान के लिए नाले की बजाय ग्राइपलाइन डालने और क्षतिग्रस्त सड़क को सीसी रोड से बनाने के निर्देश दिए। इसके बाद उन्होंने होली चाइल्ड स्कूल के पास गोविंद नगर व नरेंद्र नगर में सीवरज समाधान के लिए चल रहे कार्य का निरीक्षण किया। मेनहोल बनाकर लगाई गई मोटर से पानी पंप कर कर आगे लाइन में डालने का कार्य दो-तीन दिन में पूरा करने को कहा।

जरूरतमंद विद्यार्थियों को वितरित किए स्कूल बैग



सोनीपत। इनर व्हील क्लब, सोनीपत की ओर से शिक्षा समिति के अंतर्गत जरूरतमंद एवं वंचित वर्ग के बच्चों को शिक्षा के लिए प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से सरकारी स्कूल, नरेला और हेमनगर गुरुद्वारा स्कूल, सोनीपत में स्कूल बैग वितरित किए गए। यह कार्यक्रम क्लब की अध्यक्ष डॉ. कमलेश मलिक के नेतृत्व में आयोजित किया गया और सीमा देववन का विशेष सहयोग रहा। क्लब की ओर से विद्यार्थियों को स्कूल बैग प्रदान करते हुए उन्हें नियमित रूप से शिक्षा प्राप्त करने, अपने सपनों को साकार करने के लिए प्रेरित किया गया। डॉ. कमलेश मलिक ने कहा कि हर बच्चे को शिक्षा के लिए आवश्यक संसाधन उपलब्ध कराना समाज की सामूहिक जिम्मेदारी है। हमारा प्रयास है कि आर्थिक अभाव किसी भी बच्चे की शिक्षा के मार्ग में बाधा न बने। इनर व्हील क्लब, सोनीपत मिशन में भी शिक्षा एवं समाज के जरूरतमंद वर्गों के लिए इसी प्रकार के सेवा कार्य करता रहेगा। इस अवसर पर क्लब की उपाध्यक्ष सुषमा दहिया, कोषाध्यक्ष नीलम सहगल सहित अन्य सदस्य मौजूद रहें। क्लब सदस्यों ने बच्चों से संवाद कर उत्साहवर्धन किया।

सुरेश कुमार सेन लोक जनशक्ति पार्टी के पिछड़ा वर्ग प्रकोष्ठ के प्रदेशाध्यक्ष मनोनीत

खरखौदा। स्थानीय निवासी सुरेश कुमार सेन को लोक जनशक्ति पार्टी ने पिछड़ा वर्ग और अति पिछड़ा वर्ग प्रकोष्ठ का हरियाणा प्रदेश अध्यक्ष मनोनीत किया गया है। पिछड़ा व अति पिछड़ा वर्ग के राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं लोक जनशक्ति पार्टी (रामकल्याण पसवान) के विधायक प्रकाश चंद ने को बिहार सदन ब्रारिका नई दिल्ली में उन्हें मनोनीत पत्र सौंपा। अपनी नियुक्ति पर सुरेश कुमार सेन ने पार्टी हाई कमान चिराग पासवान, प्रकाश चंद व ज्योतिषजान ठाकुर का आभार व्यक्त किया है। सेन समाज ने उनकी नियुक्ति पर खुशी जताते नियुक्ति का स्वागत किया है।

मटिटू राजकीय स्कूल में चलाया सफाई अभियान

खरखौदा। राजकीय मॉडल संस्कृति सीनियर सेकेंडरी स्कूल मटिटू में प्रधानाचार्य प्रमोद कुमार की अध्यक्षता में राष्ट्रीय स्वयंसेवक शिबिर आयोजित किया गया। जिसमें स्कूली बच्चों को स्वच्छता के बारे में बताया। शिबिर का संचालन अंबेजी प्रकटा व एनएसएस कार्यक्रम अधिकारी दीपक ने किया। कैप की शुरुआत एनएसएस प्राध्ना के साथ हुई। इसके बाद स्कूल मुखिया प्रमोद कुमार ने बच्चों को स्वच्छता के विषय में बताते हुए साफ सफाई के महत्व पर प्रकाश डाला। बच्चों ने राष्ट्रीय स्वच्छता मिशन के तहत स्कूल में साफ सफाई अभियान चलाया व पौधारोपण किया।



महाविद्यालयों के पीजी कोर्स में 55 से 60 प्रतिशत सीटें रिक्त, अब लगेगा जुर्माना

■ महाविद्यालयों में पहली मेरिट सूची के आधार पर शनिवार को फीस जमा करवाने का रहा अंतिम दिन, आज से ओपन काउंसिलिंग



हरिभूमि न्यूज़ ►► सोनीपत

जिलेभर के महाविद्यालयों में स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम (पीजी) में चल रही दाखिला प्रक्रिया के तहत शनिवार को पहली मेरिट सूची में विद्यार्थियों के लिए फीस जमा करवाने का अंतिम दिन रहा। उच्चतर शिक्षा निदेशालय ने रक्षाबंधन पर्व के चलते विद्यार्थियों को फीस जमा करवाने के लिए एक दिन का और अवसर दिया था। पीजी कोर्स में प्रथम

सोनीपत। सेक्टर-12 स्थित राजकीय महिला महाविद्यालय में दस्तावेजों का सत्यापन करवाती छात्राएं।

चरण की दाखिला प्रक्रिया संपन्न होने के बावजूद महाविद्यालयों में दाखिले सुनिश्चित हो पाए हैं। ऐसे में 55 से 60 प्रतिशत सीटें रिक्त रह गई हैं। उच्चतर शिक्षा निदेशालय की ओर से 30 अगस्त से एक बार फिर पोर्टल रीओपन करने के साथ ओपन

विभिन्न विषयों में 75 प्रतिशत तक लगी थी मेरिट सूची
मेरिट सूची के अनुसार जिले के विभिन्न महाविद्यालयों में अधिकतर पाठ्यक्रमों की कट ऑफ 12 से 75 फीसदी तक लगी थी। राजकीय महिला महाविद्यालय, सेक्टर-12 में पहली कट आफ में एमएससी जीओग्राफी में 50 प्रतिशत, मास्टर ऑफ कॉमर्स में 61 प्रतिशत, मास्टर ऑफ आर्ट पोलिटिकल साइंस में 75 प्रतिशत, मास्टर ऑफ इंग्लिश में 40 प्रतिशत तक पहुंची थी। वहीं जीवीएम कन्या महाविद्यालय, मुरथल रोड पर पहली कट आफ में एमएससी फिजिक्स 66.28 प्रतिशत, एमएससी गणित 67.90 प्रतिशत, एमएससी कैमैस्ट्री 67.10 प्रतिशत, एमए हिंदी 52.92 प्रतिशत, एमए जियोग्राफी 63.88 प्रतिशत, एमए इंग्लिश 64.4 प्रतिशत, एमकॉम 71.64 प्रतिशत पर रही थी।

दाखिले सुनिश्चित नहीं हो पाए। परिणामस्वरूप अब विद्यार्थियों और महाविद्यालय प्रबंधकों को ओपन काउंसिलिंग शुरू होने का इंतजार करना पड़ेगा। ओपन काउंसिलिंग के लिए रविवार को पोर्टल रीओपन होने के बाद विद्यार्थी सोमवार से सीधे तौर पर फीस जमा करवाकर अपना दाखिला सुनिश्चित कर सकेंगे। बता दें कि पीजी कोर्स के तहत पहली मेरिट सूची 25 अगस्त को जारी की गई थी।

फीस जमा करवाने के लिए 29 तक का समय
उच्चतर शिक्षा निदेशालय की ओर से महाविद्यालयों की पीजी कक्षाओं में दाखिले के लिए ऑनलाइन पंजीकरण की अवधि समाप्त होने के बाद पहली मेरिट सूची के आधार पर दाखिला प्रक्रिया पूर्ण हो चुकी है। पहली मेरिट सूची में स्थान पाने वाले विद्यार्थियों को फीस जमा करवाने के लिए 29 अगस्त तक का समय दिया गया था। शेष बचित विद्यार्थियों को दूसरे चरण की काउंसिलिंग में दाखिले का अवसर मिल सकेगा। रविवार को पोर्टल फिर से रीओपन हो जाएगा।

डॉ. किरण सरोहा, प्राचार्य, राजकीय महिला महाविद्यालय, सोनीपत
महाविद्यालयों में नया शैक्षणिक सत्र प्रारंभ करने के लिए समय सीमा बीतने के बावजूद इस वर्ष पीजी कक्षाओं की दाखिला प्रक्रिया पूरी नहीं हो पाई है। निदेशालय ने 12 अगस्त को शेड्यूल में बदलाव करते हुए विद्यार्थियों को 21 अगस्त तक ऑनलाइन पंजीकरण करवाने का मौका दिया था, जबकि पहले 7 अगस्त तक पंजीकरण का समय निर्धारित किया गया था। उच्चतर शिक्षा निदेशालय ने

विविध का रख करने से घट रही छात्रों की संख्या
महाविद्यालयों में प्रबंधन के समक्ष सूची कोर्स के बाद अब पीजी कोर्स की सीटों को भरना भी चुनौतीपूर्ण बना हुआ है। सोनीपत के काफी संख्या में विद्यार्थी उच्चतर शिक्षा के लिए दिल्ली, कुरुक्षेत्र, चंडीगढ़ सहित कई विश्वविद्यालयों का रुख करने लगे हैं। यही कारण है कि जिले के महाविद्यालयों में निर्धारित सीटों पर दाखिले पूर्ण नहीं हो पा रहे हैं। सूची कोर्स में जहां दाखिला प्रक्रिया पूर्ण होने के बाद अब भी 30 प्रतिशत सीटें रिक्त बची हैं, वहीं पीजी कोर्स में भी यही हाल नजर आ रहे हैं। महाविद्यालयों में पहुंचकर अपनी फीस जमा करवाकर सीट सुनिश्चित करनी होगी। बिना दस्तावेजों के सत्यापन व फीस जमा करवाए विद्यार्थियों का दाखिला पूर्ण नहीं माना जाएगा।

खबर संक्षेप

दुकान से नकदी चुराने का आरोपित गिरफ्तार

गोहाना। शहर थाना की पुलिस ने दुकान से नकदी चोरी की घटना में आरोपित शहर के चांद को गिरफ्तार किया। न्यायालय के आदेश पर उसे न्यायिक हिरासत में भेजा गया। उत्तम नगर के मोहित ने दो जुलाई को पुलिस को शिकायत दी थी कि वह अपनी दुकान बंद करके घर चला गया था। सुबह आने पर दुकान का शटर टूटा मिला।

तप अभिनंदन एवं सास बहू दिवस आज

गन्नौर। श्वेतांबर जैन स्थानक गन्नौर मंडी में विराजमान पूज्य गुरुदेव सुनील मुनि जी महाराज, क्रांतिकारी संत प्रवचन भास्कर वीरेंद्र मुनि जी महाराज तथा सेवा भावी अहमं मुनि जी महाराज साहब ठाणे-3 की सदुप्रेरणा से आज रविवार को प्रवचन सभा में तप अभिनंदन एवं सास-बहू दिवस का आयोजन किया जाएगा। जानकारी देते हुए गौतम जैन ने बताया कि गांव शाहपुर खेड़ी निवासी राजीव जैन उर्फ बाबी ने आर्यबिल मासखमण की तपस्या की है। वहीं सुनीता देवी ने भी आर्यबिल मासखमण की तपस्या की है। इसके अलावा अनेक बहनों ने आर्यबिल का तैला तथा इकासमणों का तैला किया है। सास-बहू दिवस के माध्यम से परिवार में इस पवित्र रिश्ते को और अधिक मधुर एवं मजबूत बनाने का संदेश दिया।

स्टोर प्रबंधन पर कर्मचारियों की सुनवाई नहीं करने का आरोप, एकजुट हुए 60-70 कर्मचारी

हरिभूमि न्यूज़ ►► सोनीपत

ओल्ड डीसी रोड स्थित ऑनलाइन कंपनी के स्टोर पर शनिवार को डिलीवरी ब्याज से एक साथ दो-दो ऑर्डर डिलीवरी करवाने के बाद केवल एक डिलीवरी का भुगतान किए जाने, आवाज उठाने पर आईडी ऑफलाइन करने के विरोध में सभी कर्मचारियों का गुस्सा फूट पड़ा। स्टोर से शुरू हुआ रोष उपायुक्त कार्यालय तक जा पहुंचा। पहले स्टोर के बाहर करीब 60-70 कर्मचारियों ने एकजुट होकर कंपनी के खिलाफ रोष जताया। इस दौरान स्टोर प्रबंधन ने कर्मचारियों की एक न सुनी और डिलीवरी ब्याज की एकजुटता व रोष को देखते हुए मामले की जानकारी डायल 112 पर दी। सूचना मिलते ही डायल 112 मौके पर



सोनीपत। मॉडल टाउन में बाइकों पर सवार होकर उपायुक्त कार्यालय जाते ब्लिंकिट स्टोर के कर्मचारी। फोटो : हरिभूमि

पुलिस पहुंचने के बाद भी एकजुट रहे कर्मचारी

ऑनलाइन कंपनी के स्टोर पर कार्यरत कर्मचारियों ने जब अपनी जायज मांगों को लेकर काम बंद कर रोष जताया, तो स्टोर प्रबंधन ने पुलिस का सहारा लिया। ब्लिंकिट स्टोर के प्रबंधन ने तुरंत 112 पर कॉल करके मौके पर पुलिस को बुलाया, ताकि कर्मचारियों की आवाज को शांत किया जा सके। पुलिस के मौके पर पहुंचने के बाद भी सभी डिलीवरी ब्याज एकजुट नजर आए। पुलिस पहुंचने के बाद भी कर्मचारियों का हौसला कम नहीं हुआ। उधर मौके पर पहुंची डायल 112 के पुलिस अधिकारियों ने कर्मचारियों की मांगों को जायज बताया। इसके बाद वह अपनी मांगों को लेकर इंचाफ की गुहार लगाते के लिए उपायुक्त कार्यालय के लिए रवाना हुए।

पहुंची, लेकिन कर्मचारी अपनी मांगों को लेकर अडिग रहे। स्टोर के बाहर प्रदर्शन के बाद सभी कर्मचारी बाइकों पर सवार होकर लघु सचिवालय स्थित उपायुक्त कार्यालय पहुंचे। यहां प्रशासन को अपनी मांगों को लेकर ज्ञापन सौंपा। कंपनी की मनमानी नीतियों व शोषण के खिलाफ आवाज उठा रहे युवाओं ने उनकी मजबूरियों का फायदा उठाने का आरोप लगाया। ब्लिंकिट स्टोर

पर कार्यरत कर्मचारियों ने बताया कि वह रोजाना 16-16 घंटे अपनी जान की परवाह किए बिना कंपनी के लिए सड़कों पर घूम रहे हैं, लेकिन इसके बदले उनके साथ नाइंसाफी की जा रही है। युवाओं ने बताया कि कंपनी की ओर से उन्हें दो ऑर्डर की डिलीवरी करवाने के बाद एक डिलीवरी का भुगतान किया जा रहा है। उदाहरण के तौर पर उन्हें अगर सेक्टर-15 की डिलीवरी के लिए



सोनीपत। ओल्ड डीसी रोड स्थित ब्लिंकिट स्टोर पर कर्मचारियों को समझाते डायल 112 पुलिस कर्मी। फोटो : हरिभूमि

किलोमीटर के भुगतान में भी हेराफेरी का आरोप

डिलीवरी ब्याज ने आरोप लगाया कि कंपनी उनसे दिन-रात काम करवाती है। एक साथ दो-दो ऑर्डर डिलीवरी करने का दबाव बनाया जा रहा है, लेकिन जब पैसे देने की बात आती है, तो मात्र एक ही ऑर्डर का भुगतान किया जाता है। यानि सीधे तौर पर उनकी आधी मेहनत का पैसा कंपनी अपनी जेब में डाल रही है। जब कोई डिलीवरी ब्याज आवाज उठाता है, तो उसे बिना किसी नोटिस दिए उसकी आईडी ही ऑफलाइन कर दिया जाता है। इस तरह रोजगार छिनकर उन्हें डरारा जा सके। इतना ही नहीं, उनके किलोमीटर के भुगतान में भी हेरफेरी की जा रही है। 10 किलोमीटर दूर डिलीवरी करने के बाद मात्र साढ़े 7 किलोमीटर का भुगतान मिल रहा है। उनकी मांग है कि कर्मचारियों को 10 रुपये के बजाय 15 रुपये किलोमीटर के हिसाब से पूरा भुगतान मिले।

भेजा जाता है, तो साथ ही रास्ते में सेक्टर-14 की डिलीवरी भी थमाई जा रही है। जब वह एक साथ दोनों डिलीवरी कर रहे हैं, तो उन्हें एक ही डिलीवरी का भुगतान किया जा रहा है। जब वह दोनों ऑर्डर के भुगतान की मांग करते हैं, तो मनमाने तरीके से उनकी आईडी बंद कर दी जाती है। इसके अलावा कोई दुर्घटना होने पर

कंपनी की ओर से कर्मचारी की कोई मदद नहीं की जा रही है, उल्टा उनका पूरे दिन का भुगतान काट लिया जाता है। कंपनी उन्हें एंबुलेंस या मेडिकल सहायता तो दूर, उनका हाल तक नहीं पूछती है। उनकी मांग है कि सभी डिलीवरी ब्याज को एक्सीडेंटल मेडिकल सपोर्ट की गारंटी दी जाए।

नई औद्योगिक नीति से हो प्रदेश का कायाकल्प : बड़ौक

हरिभूमि न्यूज़ ►► गोहाना

वरिष्ठ भाजपा नेता एवं जिला कष्ट निवारण समिति के सदस्य अरुण बड़ौक ने कहा कि प्रदेश सरकार की नई औद्योगिक नीति प्रदेश की कायाकल्प करने का काम करेगी।

इस नीति से न केवल रोजगार के अवसर सृजित होंगे अपितु प्रदेश आर्थिक रूप से भी मजबूत बनेगा। इससे हरियाणा प्रदेश को राष्ट्रीय पटल पर एक नई एवं मजबूत पहचान मिलेगी। मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी ने तीन दिन पहले दिल्ली



■ मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी ने प्रधानमंत्री से मुलाकात करके विस्तृत चर्चा की

स्थित सेवा तीर्थ में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी से मुलाकात करके हरियाणा प्रदेश के विकास को लेकर चर्चा की। भाजपा नेता अरुण बड़ौक ने कहा कि मुख्यमंत्री नायब सैनी की प्रधानमंत्री से यह मुलाकात जल्द

ही प्रदेश को नई दिशा प्रदान करेगी। नई औद्योगिक नीति के तहत सरकार द्वारा अगले पांच वर्षों में पांच लाख करोड़ रुपये का लक्ष्य रखा गया है। यह नीति लॉन्च होने के दिन ही 1.10 लाख करोड़ रुपये के निवेश प्रस्ताव प्राप्त हुए थे, जिनमें से करीब 25 हजार करोड़ रुपये की परिोजनाएं धरातल पर उतर चुकी हैं। अरुण बड़ौक ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में प्रदेश सरकार दूरदर्शी विचारधारा के साथ आगे बढ़ रही है जिसके जल्द ही सकारात्मक परिणाम सामने आएंगे।

अवैध शराब की बिक्री करते गिरफ्तार

गोहाना। सदर थाना की पुलिस ने अवैध शराब बेचने के मामले में आरोपित गांव भैसवाल कलां के अमरजीत को गिरफ्तार किया। उसके विरुद्ध केस दर्ज किया गया। सहायक उप निरीक्षक बिजेन्द्र पुलिस टीम के साथ गश्त कर रहे थे। सूचना मिली कि गांव भैसवाल कलां में बावला पाना फिरनी के पास एक व्यक्ति अवैध शराब की बिक्री कर रहा है। पुलिस ने उसे काबू किया और उससे देशी शराब की 15 बोतलें और 34 पत्ते बरामद किए।



खरखोदा। पौधारोपण करते मंदिर प्रबंधन समिति सदस्य।

पवन की पुण्यतिथि पर पौधरोपण कर दी श्रद्धांजलि

खरखोदा। प्राचीन शिव मंदिर प्रबंधन समिति थाना कलां की ओर से पवन उर्फ कालू की प्रथम पुण्यतिथि पर उनकी स्मृति में पौधारोपण किया गया। इस दौरान टीम के सदस्यों एवं परिजनों ने पौधा लगाकर उन्हें भावपूर्ण श्रद्धांजलि अर्पित की। सदस्यों का कहना था कि पवन भले ही आज उनके बीच नहीं हैं, लेकिन उनकी यादें हमेशा उनके दिलों में जीवित रहेंगी। उनकी स्मृति में लगाया गया पौधा समय के साथ बढ़ा होकर उनकी यादों का प्रतीक बनेगा। जिस तरह यह पौधा बढ़ता रहेगा, उसी तरह पवन की यादें भी हमेशा हमारे साथ बनी रहेंगी। प्राचीन शिव मंदिर प्रबंधन समिति सदस्यों ने कहा कि पौधारोपण केवल पर्यावरण संरक्षण का संदेश ही नहीं देता, बल्कि किसी प्रियजन की स्मृति को प्रकृति के साथ जोड़ने का भी सुंदर माध्यम है। टीम द्वारा पौधे की नियमित देखभाल करने का संकल्प लिया गया। इस मौके पर सभी ने दिवंगत पवन उर्फ कालू की आत्मा की शांति के लिए प्रार्थना की और उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की।

हरिभूमि

आवश्यक सूचना

जिन पाठकों को अखबार मिलने में किसी भी प्रकार की असुविधा हो रही हो या उनके घर में कोई अन्य अखबार दिया जा रहा हो वह इन टेलीफोन नम्बरों पर सम्पर्क करें या व्हाट्सअप करें :-

हरिभूमि कार्यालय, बीएसएनएल के सामने, पुल के साथ, सोनीपत
फ़ोन : 9653530209, 9253681005, 9253681010

पंजाब में बनेगी भाजपा सरकार आप से लोग दुखी : डॉ. अरविंद

हरिभूमि न्यूज़ ►► गोहाना

कैबिनेट मंत्री डॉ. अरविंद शर्मा ने कहा कि पंजाब की जनता आम आदमी पार्टी (आप) सरकार से दुखी हो चुकी है। आने वाले समय में पंजाब में भी भाजपा की सरकार बनेगी। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में देशभर में भाजपा के प्रति जनता का विश्वास लगातार मजबूत हो रहा है। जनता विकास, सुरक्षास और स्थिर सरकार के पक्ष में अपना समर्थन दे रही है।

डॉ. अरविंद शर्मा ने शनिवार को सोनीपत मार्ग स्थित अपने कार्यालय में लोगों की समस्याएं सुनी और इसके बाद पत्रकारों से बातचीत की। कैबिनेट मंत्री ने इस दौरान कांग्रेस और विपक्षी नेताओं पर निशाना साधते हुए कहा कि विधानसभा लोकतंत्र का सबसे बड़ा मंच है और विपक्ष को जनता से जुड़े मुद्दे सदन में उठाने चाहिए। लेकिन कांग्रेस नेता विधानसभा में अपनी बात रखने की बजाय बाहर आकर प्रदर्शन और बयानबाजी कर रहे हैं। विधानसभा के बाहर कांग्रेस



गोहाना। लोगों की समस्याएं सुनते हुए कैबिनेट मंत्री डॉ. अरविंद शर्मा। फोटो : हरिभूमि

नेताओं ने जो किया है, उसे पूरे देश ने देखा है। विपक्ष के पास अब कोई ठोस मुद्दा नहीं बचा है। इसलिए उसके नेता मीडिया में सुर्खियां पाने के लिए अलग-अलग तरह के हथकंडे अपना रहे हैं। कैबिनेट मंत्री डॉ. अरविंद शर्मा ने कहा कि पूरे प्रदेश की जनता जानती है कि हरियाणा में कांग्रेस एकजुट नहीं है। कांग्रेस कई धड़ों में बंटी हुई है और उसके नेता आपसी खींचतान में उलझे हुए हैं।

सफाई कर्मचारी हड़ताल पर तो विधायक खुद कचरा उठाने उतरे, लोगों से शहर को स्वच्छ बनाने की अपील

कूड़े की गाड़ी में बैटकर बाजार में लोगों को किया जागरूक

■ दुकानदारों-रेहड़ी वालों से अपील, सड़क पर नहीं, डस्टबिन में डालें कचरा

हरिभूमि न्यूज़ ►► गन्नौर

शहर में सफाई कर्मचारियों की हड़ताल के बीच शनिवार को विधायक देवेन्द्र कादियान खुद सड़क पर झाड़ू लेकर उतर गए। स्वच्छ गन्नौर-स्वस्थ गन्नौर मुहिम के तहत नगरपालिका रोड पर मॉडल संस्कृति स्कूल के पास विधायक ने जनप्रतिनिधियों, समाजसेवियों और वॉलंटियर्स के साथ सफाई की। सड़क किनारे



गन्नौर। विधायक देवेन्द्र कादियान स्वच्छ गन्नौर-स्वस्थ गन्नौर मुहिम के तहत सड़क पर कचरा नहीं फेंकने की अपील करते हुए।

जमा कूड़ा उठाने के बाद विधायक उसी कचरा गाड़ी में सवार होकर जीटी रोड से रेलवे स्टेशन तक

पहुंचे। रास्ते में दुकानदारों और रेहड़ी संचालकों से सड़क पर कचरा नहीं फेंकने की अपील की।

विधायक ने दुकानदारों और रेहड़ी संचालकों को निवेदन पत्र देकर कहा कि सफाई कर्मचारियों की

शिव पार्क में सफाई कर्मियों ने सौंपा ज्ञापन

अभियान के बाद शिव पार्क में जनसमस्या सुन रहे विधायक कादियान को हड़ताल कर रहे सफाई कर्मचारियों ने ज्ञापन सौंपा। कर्मचारियों ने अपनी मांगों और समस्याओं को सरकार तक पहुंचाने की मांग रखी। विधायक ने उन्हें भरोसा दिया कि उनके हकों और मांगों की आवाज सरकार के सामने उठाई जाएगी। कादियान ने कहा कि प्रदेशभर में सफाई कर्मचारी मांगों को लेकर हड़ताल पर हैं और सरकार मामले को लेकर गंभीर है। उम्मीद है कि सोमवार तक समाधान निकलेगा और कर्मचारी दोबारा काम पर लौटेंगे।

हड़ताल के कारण शहर की सफाई व्यवस्था प्रभावित है। ऐसे में सभी लोग अपने स्तर पर सहयोग करें। कचरा सड़क पर डालने के बजाय डस्टबिन में जमा करें और कचरा गाड़ी में ही डालें। दुकानदारों व रेहड़ी संचालकों ने भी कूड़ा सड़क पर नहीं फैलाने का भरोसा दिलाया।

इस अवसर पर बिल्लू सैनी व्यापार मंडल प्रधान, अनिल ब्लॉक समिति चेयरमैन, जगबीर, दिनेश आर्य, कर्मबीर रहल, अंकित मलहोत्रा, अजय सरोहा, कृष्ण शर्मा, संजय त्यागी, अमित त्यागी, हरीश मदान, पीटर त्यागी इत्यादि गणमाध्य मौजूद रहे।

जन्माष्टमी पर लोकआस्था ही नहीं भक्ति का केंद्र बन जाता है मथुरा



धार्मिक स्थल / वीणा गौतम

भाद्रपद या भादों का महीना आते ही देश के नक्शे पर एक शहर भक्ति और भावना का संगम, आस्था का केंद्र बन जाता है, यह शहर है- भगवान श्रीकृष्ण की जन्मस्थली मथुरा। भादों महीने में, जो कल ही आरंभ हुआ है, मथुरा की गलियां अपने आपमें तीर्थ बन जाती हैं। हर गली में मौजूद अनेक मंदिरों वाला यह शहर एक विशाल पूजा स्थल में बदल जाता है।

पूरा शहर हो जाता है कृष्णमय: जन्माष्टमी के दिन तो मथुरा में पूरी रात देश के कोने-कोने से आए लाखों तीर्थयात्री भक्ति का जागरण करते हैं। सिर्फ जन्माष्टमी के दिन ही नहीं, पूरे भादों महीने में यहां देश ही नहीं बल्कि दुनिया के विभिन्न हिस्सों से आए तीर्थयात्रियों की उत्सवमयी मौजूदगी उल्लास गुंजता रहता है। हालांकि साल के बाकी दिनों में भी मथुरा में तीर्थयात्रियों की भरमार रहती है, लेकिन जन्माष्टमी की तो बात ही अलग होती है। इस दौरान तो जैसे पूरे महीने यह पूरा शहर कृष्णमय उत्सव का साक्षी बन जाता है।

पर्यटकों के ठहरने की पर्याप्त व्यवस्था: इस साल कृष्ण जन्माष्टमी 4 सितंबर 2026 को पड़ रही है और एक पखवाड़े पहले से ही तीर्थयात्रियों की ठहरने वाली सभी जगहें फुल हो चुकी हैं। लेकिन यह बात भी है कि इस शहर में तीर्थयात्रियों को ठहरने की कभी समस्या नहीं रहती, क्योंकि एक दशक पहले प्रचलित हुए, घर पर पर्यटकों को ठहराने की नीति के कारण मथुरा में बहुत सारे लोग इस मौके पर अपने घरों को तीर्थयात्रियों के लिए खोल देते हैं। इस तरह पर्यटकों को सुविधाजनक 'होम स्टे' का आनंद भी मिल जाता है। इसलिए उमड़ता है जन्मसैलाब: भादों के महीने में यहां

कंधे पर टंगा बैग अब सिर्फ किताबों/जरूरी सामानों का कैरियर नहीं रहा। अब बैगपैक भी यंगस्टर्स का स्टाइल स्टेटमेंट बन गए हैं। स्टाइल और कंफर्ट के कॉम्बो वाले ये बैगपैक्स आज के यंगस्टर्स को खूब भा रहे हैं।

यंगस्टर्स को भा रहे हैं बैगपैक के नए स्टाइल



न्यू ट्रेंड
संध्या सिंह

कोलेज, कोचिंग, ऑफिस या छोटी-छोटी ट्रेवलिंग, आज के अधिकांश युवा बहुत मूवमेंट करते रहते हैं। ऐसे में बैगपैक अब सिर्फ किताबें ढोने वाला बैग नहीं रह गया, बल्कि युवाओं की रूटीन लाइफस्टाइल, जरूरतों और पर्सनैलिटी का अहम हिस्सा बन चुका है। समय के साथ बैगपैक का स्वरूप भी बदला है। अब युवा ऐसा बैगपैक चाहते हैं, जो स्टाइलिश दिखने के साथ-साथ लैपटॉप की सुरक्षा करे, मोबाइल चार्ज करने में मदद करे, बारिश से सामान को बचाए और भीड़-भाड़ में चोरी से भी सुरक्षित रहे। यही कारण है कि बाजार में 'स्मार्ट बैगपैक' की मांग लगातार बढ़ रही है।

जरूरतों के हिसाब से बदलता बैगपैक: एक समय था, जब बैगपैक का मतलब केवल दो बड़े कंपार्टमेंट और पट्टियां हुआ करता था। लेकिन इस डिजिटल युग में विद्यार्थियों की जरूरतें बदल गई हैं। अब कॉलेज जाने वाले अधिकांश युवाओं के बैग में किताबों के साथ-साथ लैपटॉप, टैबलेट, चार्जर, पावर बैंक, ईयर बड्स, पानी की बोतल और कई अन्य जरूरी सामान भी होता है। इन्हीं बदली जरूरतों को देखते हुए कंपनियां ऐसे

बैगपैक बना रही हैं, जो सुविधाओं से भरपूर और देखने में बेहद स्मार्ट हों।

मल्टी कंपार्टमेंट डिजाइन: आज के आधुनिक बैगपैक की सबसे बड़ी खासियत उसका मल्टी कंपार्टमेंट डिजाइन है। इसमें लैपटॉप के लिए अलग कुशनयुक्त हिस्सा, टैबलेट पॉकेट, चार्जर और केबल के लिए छोटे पॉकेट, पेन होल्डर और पानी की बोतल रखने के लिए अलग-अलग जगहें होती हैं। इससे सामान व्यवस्थित रहता है और जरूरत पड़ने पर तुरंत मिल जाता है।

वाटर रेजिस्टेंट फीचर: बारिश के मौसम को देखते हुए वाटर रेजिस्टेंट फैब्रिक वाले बैगपैक तेजी से लोकप्रिय हुए हैं। इसमें अचानक बारिश होने पर भी लैपटॉप, नोटबुक और दस्तावेज सुरक्षित रहते हैं। कुछ बैगों के साथ रेन कवर भी मिलता है, जिससे अतिरिक्त सुरक्षा मिल जाती है। जिन छात्रों को रोज लंबी दूरी तय करनी पड़ती है, उनके लिए यह बेहद उपयोगी होता है।

एंटी-थेफ्ट फीचर: बैगपैक में अब एंटी-थेफ्ट फीचर भी जोड़े जा रहे हैं। छिपी हुई जिप, पीछे की ओर सीक्रेट पॉकेट, मजबूत लॉकिंग सिस्टम, यात्रा के दौरान चोरी या जोखिम को कम करते हैं। मेट्रो, बस और रेलवे स्टेशन जैसी भीड़भाड़ वाली जगहों पर यह सुविधा विशेष रूप से काम आती है।

चार्जिंग की सुविधा: टेक्नोलॉजी ने बैगपैक को और भी स्मार्ट बना दिया है। कई बैगों में यूएसबी चार्जिंग पोर्ट दिया होता है, इसमें अंदर पावर बैंक रखकर बाहर लगे पोर्ट से मोबाइल चार्ज किया जा सकता है। ऐसे में लगातार मोबाइल और इंटरनेट पर निर्भर युवाओं को बहुत सुविधा होती है। ये बेफिक्र होकर यात्रा कर सकते हैं।



स्मार्ट बैगपैक में हों ये फीचर्स: आपके बैगपैक में ये फीचर्स जरूर होने चाहिए, तभी वो स्मार्ट लगेंगे।

- इसमें लैपटॉप कंपार्टमेंट कुशनयुक्त और सही आकार का हो।
- वाटर रेजिस्टेंट फैब्रिक के साथ रेन कवर जरूरी है।
- एंटी-थेफ्ट पॉकेट और मजबूत जिप, सुरक्षा बढ़ाती है।
- गद्देदार शोल्डर स्ट्रैप और बैक सपोर्ट आरामदायक होने चाहिए।
- कम से कम 20 से 30 लीटर क्षमता वाला बैग कॉलेज छात्रों के लिए पर्याप्त रहता है।
- यूएसबी चार्जिंग पोर्ट जैसी सुविधा उपयोगी हो सकती है, लेकिन गुणवत्ता को प्राथमिकता दें। इस मामले में याद रखें कि खाली बैग का वजन जितना कम होगा, वह उतना ही बेहतर होगा।



जन्माष्टमी के पावन महीने भाद्रपद के आते ही मथुरा सिर्फ एक शहर नहीं रहता, बल्कि लोकआस्था का उल्लासमय केंद्र बन जाता है। कृष्ण जन्माष्टमी की आहट के साथ वहां की गलियां, मंदिर और घाट भक्ति के रंग में रंग उठते हैं। आधी रात जन्मोत्सव के उस अलौकिक क्षण का साक्षी बनने देश-दुनिया से लाखों श्रद्धालु यहां उमड़ते हैं। यहां की विलक्षण मय्यता-दिव्यता पर एक दृष्टि।

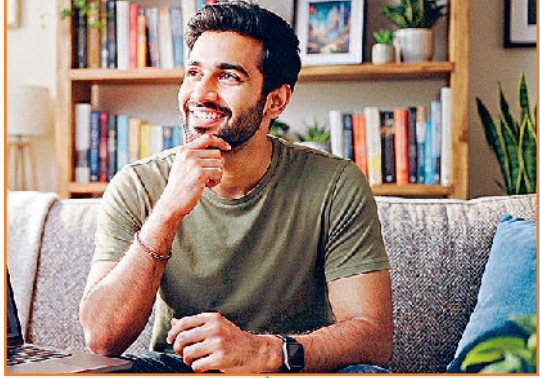


देवकी-वासुदेव को कारागार की सजा, आधी रात में श्रीकृष्ण का जन्म और फिर नवजात शिशु को लेकर वासुदेव का यमुना पार करके गोकुल पहुंचना... हजारों साल से यह कथा भारतीय जनमानस में इस कदर रची बसी है कि यहां आने वाला हर श्रद्धालु, हर जगह श्रीकृष्ण की मौजूदगी देखता है। यही कारण है कि मथुरा आने वाले तीर्थयात्री सिर्फ मंदिर का दर्शन नहीं करते। वे पूरी मथुरा नगरी में अपने होने की अनुभूति करते हैं। जहां-जहां कृष्ण की मौजूदगी के वृत्तांत मौजूद होते हैं, पहुंचकर भक्ति, भावना से हम सराबोर हो जाते हैं। जन्माष्टमी की आधी रात, जैसे ही 12 बजते हैं, मंदिरों में गुंजती

सिने ट्रेंड मनोज प्रकाश

अपने शुरुआती दौर से ही हिंदी फिल्मों से भक्ति गीत-संगीत का नाता रहा है। इनमें भी भगवान श्रीकृष्ण की भक्ति पर केंद्रित या उनका बाल्य-किशोर लीलाओं के इर्द-गिर्द बड़ी संख्या में फिल्मी गीत रचे जाते रहे हैं और लोगों में भी इनके प्रति दीवानगी खूब देखने को मिलती है। बॉलीवुड में जब श्रीकृष्ण के विभिन्न नाम और उनकी लीलाओं पर आधारित गीतों का चलन आरंभ हुआ तो ये इतने लोकप्रिय हुए कि मंदिरों और पूजा-स्थलों में भी गाए-बजाए जाने लगे। बहुत लोकप्रिय हुए ये गीत: श्रीकृष्ण पर केंद्रित कई सुधमुर गीतों को लता मंगेशकर ने अपनी आवाज में गाकर बहुत लोकप्रिय बना दिया। ये गीत श्रोताओं के मन को छूते हैं, आत्मा में उतरते हैं। इन गीतों को सुनकर अनायास ही मन में श्रीकृष्ण की मोहक छवियां उभरती हैं। सन 1972 में आई फिल्म 'अमर प्रेम' का गीत 'बड़ा नटखट है रे कृष्ण कन्हैया, का करे यशोदा मैया' आनंद बख्शी की कलम से निकलकर हर उस मां के लिए लोरी गीत बन गया, जो गोद में लिए बालक में बाल कृष्ण का रूप देखती हैं। 1978 की फिल्म 'सत्यम शिवम सुंदरम' का गीत 'यशोमती मैया से बोले नंदलाला, राधा क्यों गोरी में क्यों काला' में बाल कृष्ण की नटखट अदाएं इस तरह से समाहित हैं कि लगता है जैसे नंदलाला हमारे सामने ही मां को उलाहना दे रहे हैं। इसी तरह लता मंगेशकर का गाया फिल्म 'संतोष' (1989) का गीत 'बंसी वाले ने घेर लई, अकेली जो पनिया भरन में गई' बृज क्षेत्र के साथ ही पूरे देश में लोकगीत की तरह खूब लोकप्रिय हुआ। फिल्म 'शागिर्द' (1967) का 'कान्हा आन पड़ी मैं तेरे द्वार', 'जॉनी मेरा नाम' (1970) का 'मोसे मोरा श्याम रूठा... छुप छुप मीरा रोए, दर्द न जाने कोई' जैसे कृष्ण भक्ति के रंग में रंगे कई गीतों को लता मंगेशकर ने अपनी आवाज देकर अमर बना दिया। ये आज भी पूरे मन से सुने जाते हैं। **भक्ति-भाव से भरे कृष्ण गीत:** भगवान श्रीकृष्ण की भक्ति पर केंद्रित कई हिंदी फिल्मी भजन भी खूब सुने सुनाए जाते हैं। वर्ष 1952 की फिल्म 'बैजू बावरा' में मोहम्मद रफी ने अपनी धीरे-गंभीर आवाज में कृष्ण को याद करते हुए 'मन तड़पत हरि दर्शन को आंज' गाया था। इसे सुनकर श्रोता आज भी संभुमध हो जाते हैं। 1957 में आई फिल्म 'मिस मेरी' का गीत 'वृंदावन का कृष्ण कन्हैया सबकी आंखों का तारा, मन ही मन क्यों जले राधिका मोहन तो है

श्रीकृष्ण का जीवन दर्शन किसी रुढ़िवादी परंपरा का नाम नहीं है, बल्कि जीवन जीने का एक व्यावहारिक और आधुनिक विज्ञान है। उनकी शिक्षाओं से जुड़ी ये बातें, आज के युवाओं को संतुलित, सफल और शांतिपूर्ण जीवन जीने की राह दिखाती है।



आज के युवा श्रीकृष्ण से सीखें सुकून भरी जिंदगी के सूत्र

जीवन प्रेरणा शिखर चंद जैन

भगवान श्रीकृष्ण केवल आध्यात्मिक मार्गदर्शक नहीं हैं, बल्कि वे एक कुशल मनोवैज्ञानिक, संकट प्रबंधक और लाइफ कोच भी हैं। आज की जेनरेशन यानी वह पीढ़ी जो इंटरनेट, सोशल मीडिया और कृत्रिम बुद्धिमत्ता के साए में बड़ी हो रही है, एक और अभूतपूर्व अवसरों से घिरी है, तो दूसरी ओर मानसिक तनाव, अकेलेपन, 'फोमो' (फियर ऑफ मिसिंग आउट) और बर्नआउट जैसी गंभीर चुनौतियों का सामना कर रही है। तेज रफ्तार और तुरंत परिणाम चाहने वाली इस दौर के युवाओं के लिए हजारों साल पहले कुरुक्षेत्र के मैदान में भगवान श्रीकृष्ण द्वारा अर्जुन को दिया गया गीता का उपदेश आज और भी अधिक प्रासंगिक हो गया है।

हसल कल्चर का हल: आज के युवा 'हसल कल्चर' (रिजल्ट एंजाइटी) यानी रात-दिन भागदौड़ में उलझे रहते हैं। वे रील्स पर व्यूज, परीक्षाओं में टॉप करने या करियर में तुरंत मोटी सैलरी पाने के दबाव में लगातार जोते हैं। श्रीकृष्ण का सबसे प्रसिद्ध उपदेश है, 'कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचनः।' इसका अर्थ है कि तुम्हारा अधिकार केवल कर्म करने पर है, उसके फल पर नहीं। श्रीकृष्ण युवाओं को समझाते हैं कि जब हम परिणाम के बारे में बहुत अधिक सोचते हैं, तो हमारी पूरी ऊर्जा एंजाइटी में नष्ट हो जाती है और हम वर्तमान कार्य को पूरी निपुणता से नहीं कर पाते। युवाओं को परिणाम की चिंता छोड़कर अपनी पूरी ऊर्जा प्रोसेस पर लगानी चाहिए।

वैलिडेशन-ट्रोलिंग से निपटने का मंत्र: आज के युवाओं का एक बड़ा हिस्सा अपनी खुशी और आत्म-सम्मान को सोशल मीडिया के लाइक्स, कमेंट्स और फॉलोअर्स की संख्या से मापता है। इस वजह से वे जरा-सी आलोचना या 'ट्रोलिंग' से टूट जाते हैं। गीता में श्रीकृष्ण 'स्थितप्रज्ञ' होने की बात करते हैं यानी ऐसा व्यक्ति, जो सुख और दुःख, मान और अपमान, प्रशंसा और निंदा में एक समान रहता है। युवाओं को यह

समझना होगा कि दूसरों के डिजिटल कमेंट्स या ओपिनियन उनके अस्तित्व को तय नहीं करते। **पीयर प्रेशर-आइडेंटिटी क्राइसिस का समाधान:** आज के दौर में 'ट्रेंड्स' के पीछे भागने की अंधी दौड़ है। युवाओं पर दोस्ती, परिवार और समाज की उम्मीदों का इतना दबाव होता है कि वे अपनी असली पहचान खो देते हैं। श्रीकृष्ण कहते हैं 'श्रैयान्वधर्मा विगुणः परधर्मात्स्वनुष्ठिताता।' अर्थात् दूसरों के रास्ते पर चलकर पूर्णता हासिल करने से कहीं बेहतर है कि आप अपने खुद के स्वभाव और क्षमताओं को पहचानें, भले ही उसमें शुरुआत में कुछ कमियां ही क्यों न हों। दूसरों की नकल करके डॉक्टर, इंजीनियर या इन्फ्लुएंसर बनने के बजाय युवाओं को अपनी प्रतिभा को पहचानना चाहिए और खुद के प्रति वफादार रहना चाहिए।



सिचुएशनशिप को संभालने का तरीका: आधुनिक समय में रिश्ते बहुत जल्दी बनते और बिगड़ते हैं। श्रीकृष्ण का जीवन और उनकी शिक्षाएं सिखाती हैं कि प्रेम में 'आसक्ति' यानी पंजसिवनेस के बजाय 'अनासक्ति' और निःस्वार्थ भाव होना चाहिए। श्रीकृष्ण ने राधा से प्रेम किया, लेकिन वे जीवन भर उनके साथ नहीं रहे, उन्होंने रक्मिणी से विवाह किया और अपने राजनीतिक व सामाजिक कर्तव्यों का भी पालन किया। वे सिखाते हैं कि किसी भी व्यक्ति या परिस्थिति पर इस कदर निर्भर मत हो जाओ कि उसके बदलने पर आपका जीवन ही ठहर जाए। जीवन में आगे बढ़ना ही सच्ची परिपक्वता है। **एंजाइटी पर नियंत्रण:** आज की पीढ़ी की सबसे बड़ी समस्याओं में से एक है ओवरथ्रिंकिंग यानी अत्यधिक सोचना। श्रीकृष्ण गीता के छठे अध्याय में कहते हैं, 'बन्धुरात्मात्मनस्तस्य येनात्मेवात्मना जितः।' यानी जिस व्यक्ति ने अपने मन को जीत लिया है, उसका मन ही उसका सबसे अच्छा मित्र है। श्रीकृष्ण युवाओं को ध्यान, आत्म-नियंत्रण और सजगता के माध्यम से अपने भूतकेंद्रित हुए विचारों को नियंत्रित करने की सलाह देते हैं ताकि वे मानसिक शांति पा सकें। इस तरह श्रीकृष्ण युवाओं के सर्वश्रेष्ठ मार्गदर्शक हैं।

जन्माष्टमी आते ही श्रीकृष्ण की लीलाओं और कृष्ण भक्ति से जुड़े गीत खूब सुनाई पड़ने लगते हैं। हिंदी सिनेमा में भी श्रीकृष्ण की लीलाओं पर आधारित ऐसे अनेक गीत रचे गए हैं, जो हर किसी की जुबान पर चढ़े हुए हैं। ऐसे ही कुछ लोकप्रिय गीतों पर एक नजर।

कृष्ण-कन्हैया के रंग में रंगो बॉलीवुड के लोकप्रिय गीत



'अमर प्रेम' का गीत 'बड़ा नटखट है रे'



'खुदा' का गीत 'मव गया शोर सारी नगरी रे'



'ब्लाफ मास्टर' का गीत 'गोविंदा आला रे'



'सत्यम शिवम सुंदरम' का गीत 'यशोमती मैया से'

सबका प्यारा' आज भी जन्माष्टमी के अवसर पर सुना-गाया जाता है। मोहम्मद रफी की ही आवाज में फिल्म खानदान (1965) का गीत 'बड़ी देर भई नंदलाला, तेरी राह तक बुजवाला, ग्वाल-बाल इक-इक से पूछे कहाँ है मुरली वाला रे' श्रीकृष्ण पर केंद्रित सबसे लोकप्रिय गीतों में से एक है। **गोविंदा पर केंद्रित उमंग भरे गीत:** कृष्ण कन्हैया पर केंद्रित गीतों की बात हो और 'मटकी और गोविंदा' का जिक्र न हो, ऐसा कैसे हो सकता है भला। फिल्म 'बदला' (1974) में किशोर कुमार का गाया गीत 'शोर मच गया शोर, देखो आया माखन चोर', 'खुदा' (1982) का 'मच गया शोर सारी नगरी रे, आया बिरज का बांका संभाल तेरी गगरी रे' युवाओं को न सिर्फ जोश

में भरता है बल्कि कृष्ण की लीलाओं का इस तरह से बखान करता है कि मन में कन्हैया की शैतानियां हिलोरे लेने लगती हैं। ये गीत आज भी होली-जन्माष्टमी जैसे उत्सवों पर बजाए जाते हैं। ऐसे ही 'ब्लाफ मास्टर' (1963) का गीत 'गोविंदा आला रे आला', 'ओह माइ गॉड' (2012) का 'गो गो गोविंदा', 'किसना : द वॉरर ओ पोएट' (2005) का 'वो किसना है' जैसे गीत भी खूब पॉपुलर हुए थे। **गोविंदा पर केंद्रित उमंग भरे गीत:** कृष्ण कन्हैया पर केंद्रित गीतों की बात हो और 'मटकी और गोविंदा' का जिक्र न हो, ऐसा कैसे हो सकता है भला। फिल्म 'बदला' (1974) में किशोर कुमार का गाया गीत 'शोर मच गया शोर, देखो आया माखन चोर', 'खुदा' (1982) का 'मच गया शोर सारी नगरी रे, आया बिरज का बांका संभाल तेरी गगरी रे' युवाओं को न सिर्फ जोश



फिल्म 'लगान' का गीत 'राधा कैसे न जले'

श्रीकृष्ण पर केंद्रित गैर फिल्मी गीत भी हुए लोकप्रिय

श्रीकृष्ण पर केंद्रित लोकप्रिय फिल्मी गीतों के अतिरिक्त भजन गायकों और लोकगायकों द्वारा गाए कुछ गीत भी बहुत पॉपुलर हुए हैं। उदाहरण के तौर पर 'अरे झरपालों कन्हैया से कह दो', 'छोटी-छोटी मैया, छोटे-छोटे ग्वाल', हाथी घोड़ा पालकी जय कन्हैया लाल की', अच्युतम केशवम कृष्ण दामोदरम, 'राधे राधे जपो चले आरों बिहारी' जैसे गीतों का जिक्र किया जा सकता है। ये ऐसे गीत हैं जो घर-घर में और मंदिरों में खूब सुने-सुनाए जाते हैं।